होमियोपैथिक

लगानेकी औषधियाँ

और

प्रथमोपचार ।

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा,
Ishwari Niwas, Nepalganj, (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके)
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य एण्ड को०

इकोनमिक फार्मेसी
८४ नं० क्लाइव स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

मूल्य १)

कलकत्ता

एम० भट्टाचार्य्य एण्ड को०

की तरफसे

श्रीफकिरदास सरकार

द्वारा प्रकाशित।

मुद्रक—

श्रीब्रजेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य्य

इकोनमिक प्रेस

२५ नं० रायबागान स्ट्रीट, कलकत्ता।

इ, पि, ११००—१-११-४१ इं

पुस्तक परिचय

आकस्मिक दुर्घटना—जैसे कहींसे गहरी चोट आ जाना, आगसे जल जाना, और साँप बिच्छू आदिके डंकसे बेहोशी इत्यादि, इन्हीं सब अवस्थाओंमें विशेषत: जबकि हस्पताल भी दूर हो और डाक्टर, कविराजका मिलना भी कठिन हो तो रोगीको प्रथमोपचार करके आराम पहुँचाया जा सकता है।

साधारण जनतामें प्राय यहभाव देखा जाता है कि होमियोपैथीमें बाहरसे फोड़ा फुन्सीके घावमें लगानेकी दवा नहीं है और लगाना मना भी है; परन्तु इस प्रकारकी भावना बिल्कुल निर्मूल है। इस छोटीसी पुस्तिकामें बाहरसे लगानेकी औषधियोंकी तालिका और लोशन (टकोर) और मलहम आदि तैयार करनेकी विधि और प्रयोग विधि भी दी है।

यह पुस्तक पहले १९४० में अंगरेजीमें प्रकाशित हुई थी और हम देखते हैं कि सर्वसाधारण एवं डाक्टरी पेशा लोगोंने खूब आदर किया है इसी लिये अब हिन्दीमें हिन्दी भाषा भाषियोंके लिये यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

दु:ख-कष्टसे पीड़ित रोगी जनको उनके कष्टनिवारणमें हमारी इस पुस्तकसे कुछ भी सहायता पहुँची तो हम अपने परिश्रमको सफल समझेंगे।

कलकत्ता
इकोनमिक फार्मेसी
१९६८

भवदीय—
एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

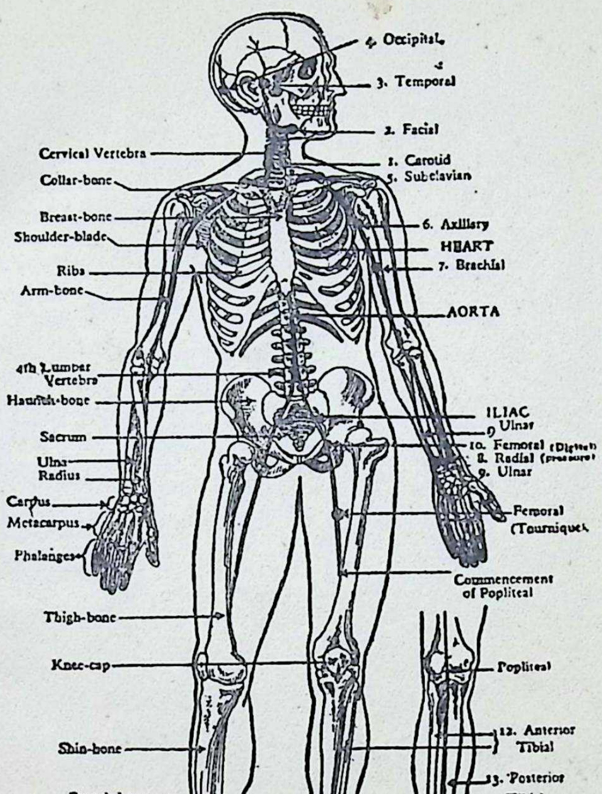

रक्त-रोधके लिये दबाव देनेके स्थानों और लम्बी हड्डियोंके चित्र।

विषय सूची ।

विषय	पृष्ठ संख्या
१। परिचय	१—४
२। लागानेकी औषधियोंकी तालिका और व्यवहार	५—६
३। लेप तैयार करनेकी विधि	७—८
४। ओपोडेल्डक लेप	८
५। सिरेटका नुस्खा	८
६। मलहल ,, ,,	९
७। इन्जेकशन विधि	१०—११
८। फोड़ाकी चिकित्सा	१२—१३
९। मुँहासे	१४
१०। गुह्य-द्वार	१४—१५
११। अधिक मद्य-पान	१५—१६
१२। संन्यास रोग	१६—१८
१३। श्वासावरोध	१८—२२
नवजात शिशु	१८
जलमें डूबना	१९
पेटसे पानी निकालनेकी विधि	२०
श्वास संचालन विधि	२१
,, सिल्वस्टरकी प्रणालीसे	२२—२६
१४। कोला, मोटर, गन्दी नालीकी गैस	२६
१५। लू लगना	२७
१६। ठिठुरना	२७
१७। साँप या पागल जानवरों द्वारा काटना	२७—२९
१८। शय्याक्षत	२९—३२
१९। फोड़ा, छाला, सूजन	३२

विषय	पृष्ठ संख्या
२०। चोट	३२—३६
२१। शरीरके अन्य-भागोंसे खून बहना	३७—४२
२२। तेजाबसे जलना	४२
२३। चूना, कास्टिक सोडा, पोटाश-आदिसे	४२
२४। आँख जलना	४२—४३
२५। नासूर	४३
२६। पक्षाघात	४४
२७। फटना	४४
२८। चेचक	४४
२९। शीतसे घाव	४४
३०। आकस्मिक अवसन्नता	४५
३१। मस्तिष्क पर आघात	४५—४६
३२। ऐंठन	४७
३३। कटना	४८
३४। मोच	४८—५०

विषय	पृष्ठ संख्या
३५। कर्णशूल	५०
३६। अपरस	५१
३७। मृगी	५१
३८। आँख	५२
३९। मूर्च्छा	५२
४०। भगन्दर	५३
४१। हड्डी टूटना	५४
४२। सरकी चोट	५७
४३। रीढ़की चोट	५८
४४। कण्ठास्थिकी चोट	५९
४५। पसलीकी हड्डी टूटना	५९
४६। आँत उतरना	६१-६४
४७। खुजली	६४
४८। कमरका दर्द	६५
४९। मुँहकी सफाई	६५
५०। बवासीर	६५
५१। बिष	६६—७१
५२। उत्तेजक पदार्थ	७१
५३। चर्म रोग	७२
५४। फोड़े और घाव	७४—७५

होमियोपैथिक

लगानेकी औषधियाँ

और

प्रथमोपचार ।

परिचय ।

(External Homoeopathic Medicines and First-Aid)

एक्सटरनल मेडिकेशन—इस शब्दसे हमारा मतलब है, कि चोट लगने या फोड़ा-फुन्सी होनेपर बाहरसे घावों और जखमोंपर नाना प्रकारसे यथा-विधि औषधि लगाकर आराम करना ।

फर्स्ट एड (प्राथमिक उपचार)—किसी प्रकारसे आहत व्यक्तिको उस चिकित्साको कहते हैं, जो उपयुक्त चिकित्सक अथवा उचित चिकित्साकी प्राप्तिके पूर्व ही कर ली जाती है ।

कुछ लोगोंका ऐसा मत है, कि होमियोपैथिक चिकित्सा-शास्त्रमें शस्त्र चिकित्सा (चीर फाड़ द्वारा) अथवा शरीरके

बाहरी भागोंपर किसी प्रकारकी औषधिका प्रयोग वर्जित है। ऐसे भी मौके आते हैं, जब चीर-फाड़की जरूरत अनिवार्य हो जाती है। एक ऐसा बड़ा घाव हो सकता है, जिसे बन्द करने तथा उभड़ी हुई चमड़ीको यथास्थानपर रखनेके लिये घावकी सिलाई रेशमी धागों या घोड़ेके बालसे करनी आवश्यक है। टूटी हुई हड्डियोंको यथास्थानपर लानेके लिये खपच्चियोंका लगाना जरूरी हो जाता है। इस प्रकारका उपचार मुँह या अन्य रीति द्वारा औषधिके अन्दरूनी सेवनका सहायक होता है। इसी प्रकार किसी रोगमें ऐसा भी हो जाता है, कि किसी वाह्य कारण (उत्तेजनात्मक या विरोधात्मक) से औषधि अपना पूरा असर नहीं दिखला पाती। अतः उसे दूर करनेके लिये चीर-फाड़की आवश्यकता पड़ती है, ताकि रोगीके पूर्णरूपेण स्वस्थ होनेकी आशा की जा सके।

"यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं है, कि प्रत्येक बुद्धिमान चिकित्सकको उसे दूर करना ही चाहिये। इसके साथ ही रोग भी दूर हो जाता है। उसे चाहिये, कि कमरेसे वह तीव्र सुगन्धिवाले फूलोंको हटा दे; क्योंकि फूलोंसे बेहोशी, मूर्च्छा आदि कष्ट हो सकते हैं। आँखकी पुतलीपर विजातीय पदार्थों-का हटाना, जिससे आँखपर सूजन आनेका डर रहता है; अत्यधिक कसी हुई पट्टीका, जिससे भीषण कष्ट मिल सकता है, ढीला करना और दूसरी ठीक तौरसे बाँधना, आहत नसको खोलकर उसपर पट्टी बाँधना, ताकि बेहोशी न आने पाये। बेलाडोना बीज खा लिया गया हो, तो कै कराकर

उसे बाहर निकालना, शरीरके नव-छिद्रों द्वारा (नाक, गला, कान, गुदा, जननेन्द्रिय आदि) यदि कोई विजातीय पदार्थ चला गया हो, तो उसे दूर करना, पथरी निकालना, नवजात शिशुकी गुदाको खोलना आदि—"

(आर्गेनन, एस० ७ फुटनोट)

इसके अतिरिक्त किसी-किसी रोगके वाह्य प्रदर्शनका उपचार करनेके लिये किसी प्रकारकी लगानेवाली औषधिका प्रयोग हानिकर हो सकता है। ऐसे विचारहीन लेखकोंकी उलूल-जुलूल बातोंका कतई ख्याल न करना चाहिये, जो अपने जरा-से अनुभवके बलपर मलहम, सिरेट, ओपोडिल्डक, ग्लिसरोल आदिका प्रयोग बगैर किसी विचारके करनेकी सलाह देते हैं।

"अनुभव तो यही बतलाता है, कि खुजली तथा उसके उभाड़की, फुन्सी तथा गुप्ताङ्गोंके रोगोंकी चिकित्सा औषधियोंके भीतरी सेवन द्वारा ही करनी चाहिये; लेकिन फिगवर्ट (Figwarts) मसेकी दवा यदि बहुत समयसे नहीं हुई है, तो उसे पूर्णरूपेण दूर करनेके लिये बाहरसे लगानेवाली तथा खानेवाली दोनों औषधियोंका सेवन आवश्यक है।"

(आर्गेनन, एस० २८२ फुटनोट)

फिर भी, शीतसे अथवा अन्य प्रकारसे होनेवाले घाव आदि शिकायतोंमें मलहम, सिरेट, लोशन आदि लगानेवाली औषधियोंका महत्व भुलाना नहीं चाहिये। पट्टी आदि चिपककर रोगीको और भी तकलीफ़ न दे, इस दृष्टिसे भी इनका उपयोग

भूलना न चाहिये। साथ ही घावको अन्य विजातीय छूतसे बचाना भी है। फिर भी, आधुनिक "ड्राई ड्रेसिङ्ग" के लाभको न भूल जाना चाहिये, जो कि प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्तिको, वह चाहे साधारण व्यक्ति हो या चिकित्सक, विदित है।

दुर्घटनाएँ तो होती ही रहती हैं, आदमी चाहे घरमें हो, सड़कपर चल रहा हो अथवा किसी गाड़ीमें ही हो। इसी-लिये प्राथमिक उपचार तथा लगानेवाली औषधियोंका प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति—स्त्री या पुरुष, जवान या वृद्धको जानना चाहिये। इस विषयपर साहित्यका अभाव नहीं है, तथापि यह भली-भाँति विदित है, कि आधुनिक शस्त्र-चिकित्सा ऐसे मामलोंमें त्रुटिपूर्ण रही है, जहाँ होमियोपैथीने बगैर औज़ारके ही उपचार किया और अनेक उदाहरण ऐसे भी हैं, जब कि रोगी सर्जनोंसे भागकर होमियोपैथी चिकित्साका आश्रय ग्रहण करते हैं।

प्रथम परिच्छेद।

कुछ लगानेवाली औषधियोंकी आवश्यकता अपेक्षाकृत अधिक पड़ती है और दूसरी ऐसी हैं, जिनका प्रयोग खास-खास मौकोंपर ही होता है।

निम्न-लिखित लगानेवाली औषधियोंका प्रयोग प्रायः होता है :—

ऐकोनाइट नैप
एसिड कार्बोलिक
" बोरिक
एस्कुग्लस हिप
एगेरिकस
अलकोहल
एलम
आर्निका मंट
वेलाडोना
वेलिस पर
ब्रायोनिया
कैलेण्डुला आफ
कैन्थरिस
कास्टिकम

चारकोल
एचिनेशिया
यूफ्रेशिया
ग्रैफाइटिस
ग्लिसरिन
जिनोकार्डिया
हैमामेलिस
हाइड्रैस्टिस
हाइड्रोजेन पैरोक्साइड
हाइपेरिकम
कोलिन (क्ले)
लैनोलिन
मर्क० बिन० आयोडिन
नैप्थलीन

फाइटोलैक्का	सल्फर
प्लाण्टेगो	सिम्फाइटम
पोटै० पारमैंग०	थूजा
रसटक्स	अरटिका युरेन्स
रूटा	वैसलीन
स्कूकम चक	विनेगार

लगानेवाली औषधियोंका प्रयोग अर्कके रूपमें अथवा घावपर लगाकर किया जाता है। जल, तेल या ग्लिसरिनमें घोलकर अथवा वैसलिन, मलहम या लैनोलाइनमें मिलाकर। गुदा या जननेन्द्रियोंमें रखकर भी काममें आती हैं।

मसलन, ऐकोनाइट नैप, कैलेण्डुला, थूजा, प्लांटेगो आदि रूईकी पट्टीपर लगाकर घावोंपर लगायी जाती हैं या रूई औषधिमें डुबोकर दाँत, नाक या कानोंमें दवा दी जाती है।

घावों, छिद्रों आदिको धोनेके लिये लोशन काममें लाया जाता है। दवाको जलके उचित अनुपातमें घोलकर लोशन तैयार किया जाता है। कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि इसमें जो जल काममें लाया जाये, वह शुद्ध (Distilled) जल होना चाहिये और जहाँ यह न मिल सके, तो छना हुआ या उबालकर ठण्डा किया जल काममें लाना चाहिये। घावोंको धोनेके लिये १ भाग दवा और २० भाग जल पुरअसर लोशनके लिये जरूरी है। यह जल शुद्ध, छना या उबला हुआ होना चाहिये। फोड़ोंके लिये लोशन अधिक जोरदार बनानेके लिये १ भाग औषधि और ८ भाग जल चाहिये। गीली-पट्टीमें,

आहत अङ्ग तथा कीड़े काटनेके स्थानोंपर भी लोशनका प्रयोग होता है। छोटे बच्चोंके लिये कम शक्ति (१—१००) के लोशनकी आवश्यकता भी पड़ती है।

गलेको साफ करनेके लिये कुल्ला करने, गुप्ताङ्गोंको धोने तथा सुई लगानेके लिये धोनेके कामोंमें लोशनका प्रयोग होता है।

औषधियुक्त लेप या मालिशका समय चला गया। लेप लगानेका तात्पर्य यह था कि जिस जगह शिकायत हो, वहाँ औषधि लग जाये और फिर मालिश द्वारा रक्तके दौरेपर इसका असर डाला जाये। आहत या रोग ग्रस्त अङ्गमें औषधिसे असर पाना सन्देहजनक है; लेकिन मालिशसे लाभमें कोई सन्देह नहीं है। जो डाक्टर विचारवान हैं, वे ऐसी दवाको रोगीके शरीरपर नहीं लगवाते, जो चिपचिपाहट लिये हो, रोगी उससे ऊब जाते हैं और साथ ही जब कोई खास फायदा भी नज़र न आये। वस्तुतः खानेवाली औषधि अधिक लाभकर है; किन्तु ऐसे भी विचित्र रोगी मिलते हैं, जिन्हें विश्वास नहीं होता, कि उनका दर्द या सूजन खानेवाली औषधिसे ही दूर हो जायेगा। कभी-कभी यह अविश्वास रोग दूर होनेमें एक मानसिक बाधा हो जाता है। ऐसी अवस्थामें डाक्टरको खानेकी दवाके साथ ही लगानेकी कुछ दवा भी देनी ही पड़ती है। ऐसे मामलोंमें निम्न उपचार सर्वोपकारी है :—

शुद्ध (साफ्ट) साबुन—६ आउन्स

प्रूफ स्पिरिट (तरल)—२४ „

लेकर धीमी आँचपर रखकर मिला ले और छानकर रख ले।

इस प्रकार तैयार किये गये लेपमें चिकनाहट नहीं रहती और कुछ तो शरीर सोख लेता और बाकी हवामें उड़ जाता है। इसमें टिङ्चर भी मिलाया जा सकता है। १ ड्राम (तरल) टिङ्चर तथा ८ ड्राम उपर्युक्त दवा मिला ले और यह अच्छा-सा लेप तैयार हो जायेगा।

ओपोडेल्डक नामक लेप निम्न विधिसे तैयार किया जाता है :—

सफेद (कर्ड) साबुन	४½ आउन्स
रेक्टीफाइट स्पिरिट	१५ (तरल) आउन्स
शुद्ध (distilled) जल	८ " "

धीमी आँचपर पानीमें साबुन गरम करनेसे बिलकुल गल जाता है और तभी उसमें धीरे-धीरे स्पिरिट मिलानी चाहिये। बीचमें चलाते रहना चाहिये। इसके कड़ा होनेके पहले ही १ ड्राम टिङ्चर तथा ८ ड्राम यह ओपोडेल्ड मिला ले और फिर छानकर किसी काँचके वर्त्तनमें रख ले। यह उत्तम लेप या मलहम है, जिसमें चिपचिपाहट नहीं होती।

'सिरेट' एक कड़ा मलहम है और निम्न-रीतिसे तैयार किया जाता है :—

स्परमेसिटी—	३ आउन्स
सफेद मोम—	६ "
जैतूनका तेल—	१४ (तरल) आउन्स

इन्हें मिलाकर गरम कर ले और ठण्डा होते समय इसमें टिङ्चर मिला ले और जबतक ठण्डा न हो जाये, जल्दी-जल्दी चलाता रहे।

मलहम—निम्न-रीतिसे तैयार किया गया मलहम बड़ा सरल और लाभकर होगा, जिसके ८ भागमें १ भाग टिङ्चर मिलाकर वक्त-जरूरत काममें लाया जा सकता है।

सफेद मोम—	२ आउन्स	
चर्बी—	३ "	
बादामका तेल	३ "	(तरल)

मोम और चर्बीको तेलमें गरम करके मिला ले; फिर हटाकर ठण्डा कर ले; लेकिन बराबर चलाता रहे।

'ग्लिसिरिनम अमिलो'—इसे सर्वसाधारण इसे ग्लिसिरिन आव स्टार्चके नामसे जानते हैं। इससे अत्युत्तम मलहम तैयार होता है। साधारणतया चेचकपर लगानेसे ठण्डक मिलती है और दागसे बचाता है :—

स्टार्च—	१ आउन्स	
ग्लिसिरिन—	८ "	(तरल)

दोनोंको इतना रगड़े, कि एक हो जायें और तब इसे पोर्सलेन डिशमें रखकर २४०° डिग्रीतक गरम करे और बराबर चलाता रहे, ताकि दोनों चटनीकी तरह हो जायें।

मलहम अकसर औषधियुक्त बनाये जाते हैं, जिनमें आवश्यक अनुपातमें टिंक्चर मिलाया जाता है। प्रायः

१ ड्राम टिङ्चर तथा ८ ड्राम मलहम या लेप मिलाया जाता है।

कैलेण्डुला, आर्निका, बेलेडोना आदिके प्लास्टर भी काममें आते हैं। अंगुली, अंगूठे आदिके कट जानेपर प्रायः एं'प्लास्ट्रस कैलेण्डुलाका प्रयोग विशेष रूपसे होता है; क्योंकि इसे लगानेपर भी आदमी अपनी दिनचर्या जारी रख सकता है। प्लास्टर सिल्क या मलमलपर लगाये जाते हैं और उचित आकारमें दूकानोंमें मिलते हैं। इसके तैयार करनेकी रीति कठिन है, लेकिन खर्चा अधिक नहीं है।

ग्लिसिरोल्समें औषधियाँ और ग्लिसिरीन होती है और इनका अनुपात मलहमोंकी भाँति ही होता है। लेप और मलहमके बीचका स्थान ग्लिसिरोल्सका है।

गुदामें इन्जेक्शन—कभी-कभी गुदामें सुई लगानेकी आवश्यकता पड़ती है। ऐसे अवसरपर औषधिको २ आउन्स तरल स्टार्च या अरारूटमें मिला ले, जो कि उबला हुआ होना चाहिये और इसे इन्जेक्शनके साधनों द्वारा गुदामें दे। यह कार्य बड़ी सावधानी तथा धीरेसे करना चाहिये।

योनिमें इन्जेक्शन—जब कभी योनिको धोनेकी आवश्यकता हो, तो लोशन तैयार करने लग जाये, उससे अच्छा यह है, कि एक ऐसा अर्क या तरल तैयार रखे, जिसे एक चम्मच लेकर एक पिण्ट शुद्ध जलमें मिला ले और इन्जेक्शनके समय काममें लाये। इसके लिये निम्न-विधि उत्तम है :—

श्रावश्यक श्रौषधि—	½	श्राउन्स
ग्लिसिरिन—	1½	”
शुद्ध जल—	२	”

बोतलमें भरकर कार्क बन्दकर इन्हें मिलाकर खूब हिलायें।

मूत्रेन्द्रिय तथा गर्भाशयमें इन्‌जेक्‌शन न देनेकी सलाह सदैव देनी चाहिये। मूत्रेन्द्रियमें सुई लगानेका परिणाम हमेशा बुरा होता है श्रौर रोग हो जानेका डर रहता है। गर्भाशयमें इन्‌जेक्‌शन लगानेसे भी ९० प्रतिशत गर्भाशयके लिये हानिकर होता है। प्रकृतिने मूत्रेन्द्रिय तथा गर्भाशयको ऐसा बनाया है, कि उसमेंसे ऐसा तरल पदार्थ निकलता रहता है जो रोग उत्पन्न नहीं होने देता। श्रावश्यकता पड़नेपर खानेवाली श्रौषधि ही उपयुक्त है।

श्रब हम श्रागे चलकर ऐसे मामलों श्रौर दुर्घटनाश्रोंपर विचार करेंगे, जिनमें लगानेवाली श्रौषधियोंका प्रयोग किया जाता है।

द्वितीय परिच्छेद ।

१। फोड़ा—पूर्व परिच्छेदमें जो लगानेकी दवा बतलायी गयी है, उसके अतिरिक्त फोड़ेको पकने देनेके लिये निम्न-लिखित चिकित्सा भी सहायक है :—

(क) आर्निकाके θ के १० बूंद २ आउन्स गरम जलमें मिलाये ; फिर रुईको उस तरलमें भिगोकर प्रत्येक २-२ घण्टे उसपर रखे।

(ख) फुलर्सकी मिट्टीको पानी या वेसलिनमें लेप-सा बना ले और मलमलके एक टुकड़ेपर फैलाकर फोड़ेपर रख दे।

(ग) अलसी (तीसी) की पुलटिस—आजकल बहुत काममें नहीं आती।

(घ) आटेकी पुलटिस—एक मामूली फोड़ेके लिये एक बर्तनमें एक रोटीके टुकड़ेपर ४ चम्मच आटा रखकर काफी मात्रामें खौलता हुआ पानी डाले, ताकि इसका लेप बन जाये, जिसके लिये उसको बराबर चलाता रहे। फोड़ेके बराबर मलमलके एक टुकड़ेपर फैलाकर उस लेपको फोड़ेपर गरम-गरम रख दे।

(ङ) नीमकी पत्तियोंको खूब महीन पीसकर थोड़ेसे जलमें गरमकर लेप-सा बना ले, जिसकी उत्तम पुलटिस बनती है।

इस प्रकारकी औषधि या पुलटिसको किसी ऐसे रेशमी कपड़ा या केलेका पत्ता रखकर बाँधना चाहिये कि औषधिकी गर्मी बनी रहे।

फोड़ेमें पस (पीव) आ जानेपर भी यदि वह न फुटे, तो अच्छा हो कि उसे किसी प्रकारकी सुईसे खोल देना चाहिये, ताकि पीव निकल जाये, जिससे रोगीको बड़ा आराम मिलता है और नींद आ जाती है। यह ख्याल रखना चाहिये, कि फोड़ेमें बाहरकी ओरसे कोई विजातीय पदार्थ न प्रवेश कर सके, फोड़ेको साफ रखे। इसके लिये निम्न प्रकारका उपचार उपयोगी है।

(क) पस निकालनेके लिये फोड़ेको जरूरतसे अधिक न दबाये। खौलते हुए पानीमें कुछ बूंद आर्निका θ डालकर फोड़ेको सेंक दे।

(ख) यदि फोड़ा जहरीला हो गया हो, तो केलेण्डु-लाकी जगह एचिनेशिया θ काममें लाये।

(ग) उपर्युक्त लोशनसे भी पस यदि इतनी जम गयी हो कि न निकले या फोड़ेको तहमें जम जाये, तो हाइड्रोजेन परअक्साइडसे पतला कर लेना चाहिये।

(घ) जब फोड़ा इस प्रकार साफ हो जाये, तो सूकस केलेण्डुला या अलकोहलसे उसे पोंछे और फिर एण्टिसेप्टिक गाजपर डाक्टरी रुई रखकर फोड़ेपर रख दे; फिर उसे अच्छी तरह पट्टीसे बाँध देना चाहिये।

(ङ) घावपर जो नयी चमड़ी हो वह फटने लगे, तो गाजपर कैलेण्डुला सिरेट पतला-पतला फैलाकर घावपर रखे; फिर उसपर रुई रखकर पट्टीसे बाँध दे।

२। ऐक्नि—मुँहासे

(क) नियमित भोजन और रहन-सहनके साथ ही खूब सफाई रखे और ठण्डे जलसे स्नानकर खुरदरे तौलियेसे शरीर रगड़कर सुखाये।

(ख) सीडर विनेगारमें बराबर जल मिलाकर दिनमें २-३ वार लगाये और फिर सूखे कपड़ेसे पोंछकर कैलेण्डुला सिरेट लगाये।

(ग) बतलायी दवाका सेवन करे।

(घ) चेहरेपर साबुन न लगाये। यदि पपड़ी जमने लगे, तो "कैसटाइल" साबुनका प्रयोग करे।

३। गुदा—यदि बड़े और कड़े टुकड़ोंसे दरार हो जायें, या जब रातमें कीड़े निकलते हों तो ऊपरी दवाका प्रयोग करना चाहिये।

(क) यदि गुदाके दरारों (anal fissures) से खून निकलता हो, तो डाक्टरी रुईमें हैमामेलिस लगाकर लगाये। खून बन्द करनेके लिये दूब (दूर्वा) घासका अर्क भी उपयोगी है।

(ख) जब खून बन्द हो जाये, तो कैलेण्डुला सिरेटसे अन्दर और बाहरसे उसे भिगोये। शौचके पूर्व सिरेटका प्रयोग करे, ताकि नयी खाल सुरक्षित रहे और नये दरार न

होने पायें। आवश्यक औषधिके सेवन द्वारा कड़े दस्त और कब्जियतसे बचता रहे।

(ग) कीड़ोंके लिये, आवश्यक खानेकी औषधिके अतिरिक्त गुदाके बाहर थोड़ी चर्बी लगाये, रातमें बहुत-से कीड़े निकलते दिखलायी पड़ेंगे। इन कीड़ोंको रुईसे साफ करके उसे नष्ट कर दे। यह सफाई दो-तीन बार करनी चाहिये।

अन्य प्रकारके कीड़ोंकी औषधिके लिये कीड़ोंके विषयपर लिखे गये अंशमें देखिये।

(घ) भगन्दर, बड़ी उमरमें—(१) सिरेट साइलिसिया; (२) सिरेट थूजा; (३) विशुद्ध तारपीनके तेलके सत्का इन्जिक्शन—"पूर्ण सफलता, लेकिन कष्टकर;" (४) कैलेण्डुला सिरेट।

(ङ) गुदामें घाव—(१) पायोनिया θ पेण्ट या सिरेट; (२) थूजा θ या सिरेट।

(च) गुदामें मसे—थूजा θ पेण्ट।

४। अधिक मद्यपान—ताड़ी, बियर या शराब पीनेसे जब अधिक नशा हो जाता है और आदमी उस नशेसे अत्यन्त पीड़ित होने लगता है।

(क) रोगीको दाहिनी करवटसे लिटा दो, सिर जरा ऊँचा उठा हो, लेकिन उसे कभी भी पीठ या पेटके बल न लेटाये। उसके सब कपड़े खोल दो और गले या सीनेपर कोई दबाव न हो। नमकका पानी, सरसोंका तेल मिलाकर या पंखसे गलेमें सरसराहट करके कै करानेकी कोशिश की जाये।

यदि इसमें सफलता न मिले, तो पेट दबाकर काम निकाला जाये। जब रोगी थोड़ा स्वस्थ होने लगे, तो उसे तेज़ कालफी-का पिलाये।

(ख) जब मद्यपानका नशा इतना तीव्र न हो, तो सरपर या सीनेपर शीतल जल डालनेसे नशा उतर जायेगा, उसे कुछ घण्टे नींद आयेगी और शराबका असर दूर हो जायेगा।

(ग) मद्यपानकी शारीरिक खराबियोंके लिये खानेकी औषधिका सेवन कराना चाहिये।

५—संन्यास रोग (अपाप्लेक्सी)—इस रोगकी भिन्नता—(१) वेहोशी, (२) शराबका नशा, (३) अफीम, गाँजा आदिके विषपान, (४) स्नायविक रोग सम्बन्धी वेहोशी आदि रोगोंसे याद रखनी चाहिये।

इस रोगके आक्रमणमें सर्वप्रथम कमीजका गला ढीला कर देना चाहिये यानी गला खुला हुआ हो, सर जरा उठा हुआ हो और खुली हवा मिलती रहे।

ठण्डे पानीसे माथा धो डाले; यदि हो सके तो कुटी हुई बरफ रखे। सरसोंकी पुलटिस पिण्डलियोंपर रखे।

रोगीको खाटपर सीधा लेटा दे और घुटने मोड़कर पाँव खटियेके नीचे लटका दे, १५ मिनटतक दोनों पाँवोंको गरम पानीमें रखे, जिसके बाद गरम जलकी बोतलें वहाँ लगायें; एक घण्टे तक सरसोंकी पुलटिस पिण्डलियोंपर लगी रहने दे। यदि सरसों न मिले तो हाथोंसे उस स्थानोंको मले। सर

और कन्धोंको इस प्रकार दाहिनी ओर सीधा करके रखे, कि जीभ मुँहके भीतरकी ओर गिरने न पाये। उसके पास पूर्ण शान्ति हो, किसी प्रकारकी रोशनी न हो, खिड़कियोंपर काले पर्दे हों, लोगोंको पास न आने दे और न शोरगुल होने दे; किसी भी अवस्थामें उसे किसी प्रकारकी उत्तेजक दवा न दे।

यदि रोगी ६ घण्टोंसे अधिक बगैर पेशाब किये ही बेहोश रहे या यदि पेशाब न होनेसे मूत्राशय फूल जाये और बूंद-बूंदकर गिरता हो, तो पेशाब करनेकी नली लगाकर मूत्राशय खाली करा देना चाहिये।

यदि पूरी खुराक खा लेनेके बाद ही बेहोशी (फिट) आ जाये, तो भी कै करानेकी चेष्टा कदापि न की जाये। यदि कै बढ़ेगी, तो सरमें खून चढ़ जानेका डर रहेगा, जिससे हानि हो जाती है।

पेट साफ रखनेका ध्यान रखना चाहिये। यदि रोगी पी सके, तो जुलाब देना चाहिये, लेकिन अक्सर नहीं।

अपास्मृतीके आक्रमणके परिणाम-स्वरूप कभी-कभी रोगीका एक हाथ या पैर या शरीरका एक भाग अथवा वाक्-शक्ति बेकार हो जाती है। चेहरेकी मांस-पेशियोंपर भी इसका परिणाम पड़ सकता है। खानेकी दवा दी जानी चाहिये।

उत्तेजना या चिन्ता आदिसे रोगीको दूर रखनेकी पूरी चेष्टा करनी चाहिये। हलका भोजन, केवल शाकाहार और केवल दूध और जल पीनेके लिये देना चाहिये।

आरम्भसे ही बतायी गयी औषधियोंका सेवन कराना चाहिये। चूंकि गठिया, गुर्देके रोग या गर्मीके रोगीको ही अक्सर इसका आक्रमण होता है, इसलिये पहले इन्हीं रोगोंकी चिकित्सा करनी चाहिये।

अनिवार्य उपचार—दिनमें भोजनके बाद दो घण्टे और रातमें भोजनके बाद ८ घण्टे आराम।

६—श्वासावरोध—इसे ऐसफिक्सिया या साँस बन्द हो जाना भी कहते हैं। इस रोगके अनेक कारण हैं।

(१) नवजात शिशुका (क) रङ्ग नीला हो जाता है और हृदयकी गति तीव्र हो जाती है ; प्रायः श्वास-द्वार कफसे बन्द हो जाते हैं या किसी ऐसे विष या विषाक्त पदार्थसे भी हो जाता है, जो कि जन्मके पहले माताको दिया गया हो। ऐसी अवस्थामें मुँह और गलेको अंगुली या वायु भरनेके औजारसे साफ कर दे और कफ निकाल दे। दूसरा प्रभावशाली तरीका यह है, कि बच्चेके पाँव पकड़कर सर नीचे लटका दे और कन्धों तथा नितम्बोंपर थपथपी दे और श्वासकी गति उत्पन्न करनेकी रीतिका प्रयोग करे। कारबन डाइ-आक्साइड और आक्सिजनके मिश्रण (मिक्सचर) का प्रयोग किया जा सकता है। यदि बच्चेके फेफड़े मजबूत होंगे, तो इस नियमसे अवश्य लाभ होगा। (ख) सफेद 'ऐसफिक्सिया' में यह अवस्था तब होगी, जब उसके हृदयकी गति रुकनेवाली होगी। गाल चिपक जाते हैं, मांस-पेशियाँ निर्जीव-सी होने लगती हैं और हृदय कमजोर होने लगता है। हृदयकी गति बन्द होनेके

ये लक्षण हैं। बच्चेको गर्म रखनेकी चेष्टा करनी चाहिये। कारबन डाइ-आक्साइड तथा आक्सिजनका मिश्रण नाकसे देना चाहिये। यदि इस उपचारके बाद भी बच्चा स्वस्थ न हो, तो जानना चाहिये कि मस्तिष्क बुरी तरह आहत हो गया है और जीवनकी आशा कम है। खानेको बतायी गई दवाने अनेक निराश रोगियोंको जीवन-दान दिया है।

(२) "अनास्थीसिया" या अन्य कारणोंसे—कुछ सेकण्डके लिये रोगीका सिर नीचे और पाँव ऊपर करके रखे। नवजात शिशुके लिये बताये गये उपचारका प्रयोग करना चाहिये।

(३) डूबना—श्वासकी गति लानेकी रीति द्वारा सर्व-प्रथम और तुरन्त श्वास भरना चाहिये। दूसरा उपचार शरीरको गर्मी पहुँचाना है और रक्त-सञ्चालनकी व्यवस्था करनी चाहिये। कम्बल और सूखे वस्त्र पहनाना चाहिये और तुरन्त उसकी चिकित्सा आरम्भ करनी चाहिये। जहाँतक सम्भव हो रोगीको खूब खुली हवा मिलनी चाहिये। उसके आस-पास अधिक लोग न रहने पायें।

(क) किसी काठके तख्तेपर रोगीको पीठके बल लेटा दे और पाँवकी ओर जरा ऊँचा रखें। गर्दन, सीना या कमरसे कपड़े हटा देना चाहिये; कन्धोंको उठाकर किसी छोटी, किन्तु कड़ी तकियाके सहारे रखना चाहिये। कपड़ोंकी तह लगाकर कन्धोंसे जरा हटाकर पीठके नीचे रखना चाहिये।

(ख) श्वासनलीसे वायु प्रवेश करानेका उपाय करो और उसे जारी रखो। इसके लिये नाक और मुँह साफ

रखना चाहिये। मुँह खुला रखो। जीभ बाहरकी ओर खींच लो और उसे बाहरकी ओर ही रहने दो। जिस समय अन्य उपचार हो रहा हो, किसी व्यक्तिको हाथमें रूमाल लेकर रोगीकी जीभ पकड़े रहना चाहिये।

(ग) फिर पेटसे पानी बाहर निकालनेके लिये पेटके नीचे कपड़े लपेटकर रखकर मुँहके बल लेटा दे। यह ऐसी अवस्था है, जब रोगीकी पीठ उभड़ी हुई हो जाती है। अब जीभको बाहरकी ओर पकड़े रखनेकी जरूरत न होगी; क्योंकि इस अवस्थामें वह आप ही बाहर निकली रहेगी।

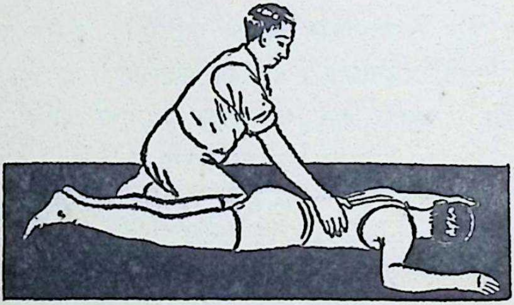

चित्र नं० १

इस अवस्थामें रोगीको लानेके लिये उसके एक ओर झुको भुजाओंको शरीरसे लगा दो, पाँवोंको सटा दो, उसका चेहरा अपने हाथसे बचाये रहो और फिर कमरके कपड़ेको पकड़कर उलट दो। पेटके नीचे कपड़ेकी गद्दी हटा दी जा सकती है;

क्योंकि उसका महत्व कम रह जाता है। इसे "शेफर" का तरीका कहते हैं।

(घ) जब रोगीको इस अवस्थामें लेटा दो, तो पेटसे पानी निकालनेके लिये कमर और पीठके बीचके भागको दबाओ (देखिये—चित्र न० १)। फिर ऊपरकी ओर पीठ दबाओ, ताकि फेफड़े भी खाली हो जायें।

(ङ) प्रश्वास निकालनेकी विधि—रोगीके एक ओर घुटने मोड़कर अपनी एँड़ियोंपर बैठ जाओ, मुँह रोगीके सरकी ओर हो (चित्र न० १) दिखलायी गयी रीतिमें अपने दोनों हाथोंको रोगीकी कमर और पीठके बीच भागपर रखो।

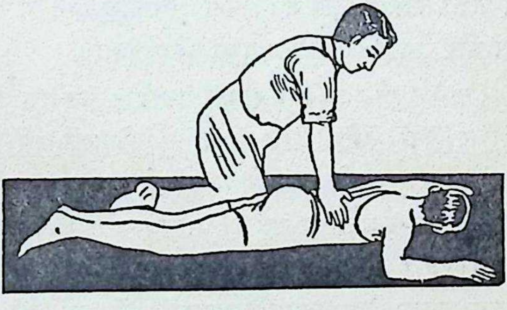

चित्र न० २

अंगुलियाँ दोनों बगलपर हों और कलाइयाँ एक दूसरेके आमने-सामने हों। अंगुलियाँ कसकर उस भागपर हों और जमीनकी ओर झुकी हों। फिर अपनेको उठाकर शरीरका सारा भार अपने हाथोंपर डालो जैसा कि चित्र न० २ में

दिखाया गया है। याद रहे कि रोगीके शरीरको बहुत जोरसे दबानेकी आवश्यकता नहीं है, बल्कि शरीरका भार ही उसके लिये काफी है। इस प्रकार भार पड़नेसे पेड़ू दबेगा, साथ ही पेटका समस्त भाग भी जमीन या तख़्तपर दबेगा। रोगीके शरीरके इस भागपर इस प्रकारसे दबाव पड़नेपर फेफड़ोंमेंसे वायु निकलेगी और साथ ही श्वासनलीमें जो भी कफ या पानी होगा, वायुके साथ ही मुँहके रास्तेसे बाहर निकलेगा।

(च) श्वास-क्रिया—रोगीके शरीरमें श्वास भरनेके लिये अपने हाथोंपरसे शरीरका भार हटा लो और फिर पहलेकी भाँति बैठ जाओ। इससे शरीरके दबे भाग अपनी पूर्वावस्थाको प्राप्त हो जायेंगे। पेट और पेड़ू फैलेंगे, सीना खुलेगा और रोगीके फेफड़ेमें वायुका प्रवेश होगा।

(छ) शरीरका भार रोगीके पेट और पेड़ूपर डालने और फिर हटा लेनेकी यह क्रिया १ मिनटमें १२ बारके हिसाबसे जारी रखनी चाहिये। अपने शरीरका भार २ सेकण्डतक रोगीके शरीरपर डालना चाहिये और ३ सेकण्डतक पेट, पेड़ू और छातीको पूर्वावस्थामें आने देना चाहिये। जब श्वास-प्रश्वास क्रिया स्वाभाविक-रूपसे होने लग जाये, तो जैसी अवस्था हो या उपर्युक्त क्रियाको बन्द कर दे या थोड़ी कर दे; फिर हाथ-पैरको खूब रगड़ा जाये, मालिश-सी करता रहे, ताकि रक्त-सञ्चालन तीव्र गतिसे होने लगे।

श्वास-प्रश्वासकी क्रियाके स्वाभाविक-रूपमें आ जानेपर भी रोगीपर १ घण्टेतक सावधानीसे नज़र रखनी चाहिये, ताकि

श्वासकी गति बन्द न होने पाये। यदि श्वास-प्रश्वासकी क्रिया रुकती मालूम पड़े, तो फिर इसी रीतिका अनुसरण करना चाहिये।

श्वास संचालनकी सिलवस्टरकी प्रणाली।

पहले जिस अवस्थामें लेटाकर रोगीमें श्वास-प्रश्वासकी क्रिया लानेकी रीति बतलायी गई है, उसके अनुसार यदि रोगीको पेटके बल लेटाना असम्भव हो, तो निम्न-लिखित प्रणालीका अनुसरण करना चाहिये, ताकि श्वास-प्रश्वासकी क्रिया जारी हो जाये।

(क) एक समतल जगहपर रोगीको पीठके बल लेटा दो। गले, छाती और कमरपरसे सब कपड़े हटा दो, कन्धोंके नीचे मोटा कड़ा तकिया या कपड़े लपेटकर रख दो।

(ख) एक दूसरे व्यक्तिको एक रूमाल हाथमें लेकर रोगीकी जीभ पकड़ा दो; वह उसे बाहरकी ओर खींचे और उसी अवस्थामें कसकर रखे रहे। यदि यह न किया गया, तो जीभके पीछे और गलेकी ओर चले जानेका भय रहेगा, जिससे श्वासनली बन्द हो जायेगी और इस प्रकार उसके प्राणान्त होनेका भीषण खतरा रहेगा।

(ग) सिरकी ओर जरा हटकर घुटनेके बल बैठ जाओ, दोनों हाथोंकी कुहनियोंको पकड़ लो और हाथोंको

सरके ऊपर उठाओ और फिर अपनी ओर ले जाओ, यहाँतक कि हाथ जमीनसे छू जायें। यह क्रिया करनेसे सीना फैलता है और फेफड़ोंमें ताज़ी हवा प्रवेश करती है। यह श्वास-सञ्चालनकी क्रिया है। देखो—चित्र नं० ३।

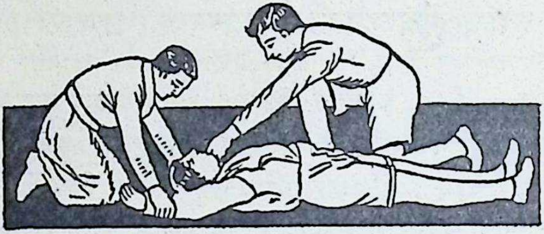

चित्र नं० ३

(घ) फिर तुरन्त ही रोगीके दोनों हाथोंको उसके दोनों बगल ऊपर और नीचे उठाओ, गिराओ और उसके दोनों

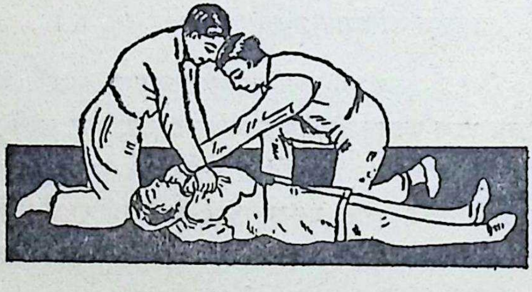

चित्र न० ४

हाथोंसे उसकी पसली और छातीको दबाओ। पसलियोंको इस प्रकार दबानेसे फेफड़ोंसे वायु बाहर निकलती है। इस

अवस्थामें उसे दो सेकेण्डतक रखो और फिर श्वास-सञ्चालनकी पूर्व क्रिया जारी रखो।

ये क्रियाएँ बराबर धुनके साथ जारी रखो, जबतक कि रोगीमें श्वास-प्रश्वासकी क्रिया स्वाभाविक-रूपमें सञ्चालित नहीं हो जाती। ये हरकतें लगभग १ मिनटमें १२ बारके हिसाबसे जारी रखनी चाहिये, जिसमें २ सेकण्ड दबाव डालनेमें और २ सेकेण्डतक दबाव हटाये रहनेमें लगाना चाहिये।

जबतक रोगीकी नाड़ी चलने न लगे, ये क्रियाएँ कम-से-कम १ घण्टे तक जारी रखनी चाहिये।

जिस समय ये क्रियाएँ हो रही हों, उस समय सुँघनी या अन्य छींक लानेकी दवासे नासिकाग्रको उत्तेजित रखना चाहिये। चेहरे और छातीपर बारी-बारीसे ठण्डा और गरम जलके छींटे मारना चाहिये। अङ्ग-प्रत्यङ्गको सूखे तौलिये या किसी अन्य कपड़ेसे खूब रगड़ना चाहिये, ताकि रक्त-सञ्चालन होता रहे।

जब श्वास-प्रश्वासकी स्वाभाविक गति जारी हो जाये, तो ये क्रियाएँ रोक देनी चाहिये। रोगीको गरम कम्बलसे ढँक देना चाहिये और हाथ-पैरको हृदयकी ओर रगड़ते रहना चाहिये। पैरके तलवों, बगलमें तथा पेटपर गरम जलकी बोतलें रखनी चाहिये।

जब रोगीमें कुछ खाने-पीनेकी शक्ति आ जाये, तो थोड़ी-थोड़ी देरमें १-१ चम्मच गरम जल पिलाते रहना चाहिये।

यदि अवस्था शोचनीय हो, तो आध आउन्स ब्राण्डीको २ औंस गरम जलमें मिलाकर आँतके द्वारा सुई (इञ्जेक्शन) लगानी चाहिये।

काफी समयतक रोगीकी देख-भाल होती रहनी चाहिये, ताकि श्वास-क्रिया बन्द न होने पाये। यदि श्वास बन्द होने लगे, तो उसके सञ्चालनकी वही क्रिया फिर जारी कर देनी चाहिये।

डूबनेके परिणामसे रक्षा करनेका एक और सरल तरीका है।

रोगीको एक ऐसे तख़्ते या बाँसकी सीढ़ीपर लेटा दो, जो बारी-बारीसे पाँव और सिरकी ओरसे उठायी-गिरायी जा सके। फिर पहले सिरकी ओर उठाकर नीचे करो और फिर पाँव उठाकर नीचे रखो। यह क्रिया काफी समयतक जारी रखनी चाहिये।

(४) कोल गेस, कोयलेके धुएँ, पत्थरके कोयलेकी आग, नालीसे निकली गैस, मोटरसे निकलनेवाली गैस, चूनेकी भट्टीकी गैस :

सर्वप्रथम रोगीको खुली हवामें ले जाओ। कपड़े ढीले कर दो और श्वास-प्रश्वास सञ्चालनकी क्रिया उत्पन्न करो। आवश्यक औषधिका पान कराओ।

"एक गीले तौलियेकी नङ्गी छाती और पेटपर चटकाओ।"

यदि रोगी किसी ऐसे कमरे या इमारतमें हो, जहाँ गैस या धुआँ भरा हुआ हो, तो नाकपर गीला रूमाल रखो और नीचेकी ओर झुके रहकर जितनी जल्दी हो सके, सावधानीके साथ रोगीको बाहर निकाल ले जाओ। ऐसे कमरे या इमारतमें जिस समय रहो श्वास कम-से-कम लेनेकी चेष्टा करनी चाहिये। गैस रोकनेके लिये बनाया गया तोबड़ा सर्वोत्तम है।

(५) लू या सूर्यकी किरणकी लपट लगना :—

रोगीको किसी सायेदार स्थानपर अन्धेरे कमरेमें ले जाना चाहिये। ठण्डी चीजें या शर्बत आदि पिलाओ, बीच-बीचमें गुनगुना जल पिलाते रहना चाहिये।

(६) ठिठुरना :—

रोगीके हृदयपर खूब गरम कपड़ा रखो या जरा ऊँचेसे गरम गरम पानी सीनेपर गिराओ। पास ही काफी आँच भी होनी चाहिये, ताकि स्थान गरम रहे। पीनेके लिये दूध और ब्राण्डी देनी चाहिये।

७—साँप या पागल जानवरोंका काटना—विषके समस्त शरीरमें फैलनेके पूर्व ही तुरन्त उपचार करना चाहिये। जिस स्थानपर काटा गया हो, उसके और हृदयके बीचके स्थानको किसी कपड़े या रबरकी नलीसे इस प्रकार जकड़ देना चाहिये कि खूनका दौरा उधर बन्द हो जाये। बजाय एक स्थानके अच्छा तो यही होगा, कि २-३ जगहोंपर बाँध दिया जाये।

घावपर कलसे या ऊँचाईसे पानी डाले। यदि अपने मुँहमें किसी प्रकारका घाव या छूत पकड़नेवाला रोग न हो, तो रोगीके घावसे खून खींचकर थूकते जाओ। आहत स्थानको नीचेकी ओर रखो, ताकि खून बहता रहे और विष धोया जा सके। घावमें टिञ्चर आयोडिन डालना चाहिये या सुई लगा देनी चाहिये। यदि यह न हो सके, तो मेथिलेटेड स्पिरिट या ह्विस्की काममें लानी चाहिये। २ ग्राम पोटाश परमाङ्गनेटको १ ड्राम जलमें मिलाकर रूई उसमें भिगोकर घाव धोते रहना चाहिये। प्याज़ काटकर घावपर रखना चाहिये और एक टुकड़ा हरा हो जाये, तो बदलते रहना चाहिये। यह अच्छा उपचार माना गया है। गरम विनेगार (सिरका) भी धोनेके लिये अच्छा होता है।

जिस स्थानपर साँपने काटा हो, उसे थोड़ा काटकर या छेद करके खून निकाल देना चाहिये। एक जीवित मुर्गा या मुर्गी लेकर उसके गुदाको काटकर आहत स्थानपर रखना चाहिये, ताकि उसके कटे भागसे जो खून बहे वह आहत स्थानपर गिरे। कुछ मिनटोंके बाद पक्षी मर जायेगा; फिर दूसरा पक्षी लो। इस प्रकार तबतक करते रहो, जबतक कि वह पक्षी मरे नहीं। उसके न मरनेपर समझ लेना चाहिये, कि अब विष नहीं रहा।

रोगीको इतनी शराब पिला देनी चाहिये, कि उसे नशा आ जाये। हर १०-१५ मिनट बाद ½ आउन्स जैतूनका तेल देते रहना चाहिये।

यदि काटनेवाला जानवर कुत्ता या बिल्ली आदि पागल न हो, तो साधारण घावकी भाँति उपचार करना चाहिये जैसा कि आगे बतलाया जाता है।

८—मधुमक्खी, बर्रे आदिका डङ्क मारना—चेहरे, ओंठ या आँखपर लगे डङ्कसे भीषण दर्द और क्षति होती है। मधुमक्खीके डङ्क आहत स्थानमें गड़े रहते हैं, उन्हें ढूँढ़कर निकाल देना चाहिये।

डङ्कके विषको दूर करनेके लिये खाने या धोनेका सोडा या प्याज़से खूब रगड़ना चाहिये।

बिच्छूके डङ्क मारनेपर लेडम θ या आर्निका θ आहत स्थानपर लगाना चाहिये। लगानेके लिये एमोनिया (लीकर) तरल भी उत्तम औषधि है।

गोजर, मकड़े आदिके काटनेपर लगानेके लिये 'टिङ्चर, एपिस मेलिफिका' सर्वोत्तम औषधि है। पोटास पर्माङ्गनेटके जलके साथ (१—५००० अनुपात) बनाये गये लोशनसे धोनेके बाद कटे प्याज़से रगड़ना भी प्रभावपूर्ण होगा।

९—शय्याक्षत—जब किसी रोगीको लगातार अर्सेतक एक ही अवस्थामें लेटे रहने पड़ता है, तो शरीरका जो भाग अधिक दबा रहता है, उसमें रक्त-सञ्चालनका अभाव पैदा हो जाता है, वह स्थान लाल हो जाता है, नीला-काला होने लगता है और खुरदरा होकर निर्जीव हो जाता है; उस स्थानकी अनुभव शक्ति या स्पर्श क्षीण हो जाती है, यहाँतक कि उसके घाव हो जानेकी खबर रोगीको भी नहीं लगती। इसलिये

यह आवश्यक है, कि डाक्टर या नर्स ऐसे रोगीकी परीक्षा करते रहें कि उसके शरीरमें शय्याक्षत न होने पाये।

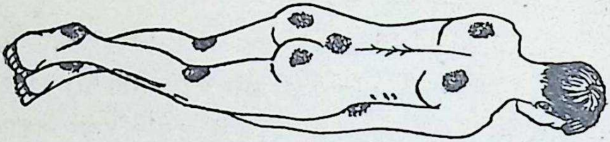

चित्र न० ५

शरीरके जिन भागोंमें प्रायः यह रोग हुआ करता है, वे हैं—रीढ़, पुट्ठे, कुहनियाँ, नितम्ब, एँड़ी आदि। इन भागोंको प्रति दिन देखते रहना चाहिये। रोगीके वृद्ध या अशक्त होनेके कारण यह रोग शीघ्र होता है। यदि शय्यापर पेशाब हो जाती हो या किसी अन्य कारणसे बिछौना गीला हो जाता हो तो उसके शीघ्र न बदल देनेसे भी यह रोग हो सकती है।

ऐयर-वेड या वाटर-वेड (रबरके थैलेमें हवा या पानी भर कर बनाया गया बिछौना) से रोगीके शरीरपर ऐसा दबाव नहीं पड़ता और इस रोगका खतरा नहीं रहता। अभाग्यवश एक तो इनका दाम ही ज्यादा है और दूसरे सर्वत्र सुलभ नहीं हैं।

डाक्टरी रुईकी गद्दियाँ बनाकर शय्याके ऐसे स्थानपर रखना, जहाँ शरीरका वह भाग पड़ता हो, जिसमें यह रोग हो जानेकी आशङ्का हो। इससे दबाव कम पड़ेगा और रोगका खतरा कम होगा।

चूंकि निवारण प्रतिकारसे सर्वदा अच्छा होता है, इसलिये शरीरके ऐसे भागोंको आर्निका θ को बराबर जलमें मिलाकर लोशन बनाकर उससे दिनमें दो बार धोना चाहिये। इससे उस स्थानकी खाल कड़ी पड़ जायेगी। सुखानेके लिये तौलियेको उसपर रखना चाहिये, रगड़ना नहीं चाहिये। जब सूख जाये, तो हथेलीमें ईडीकोलोन या मेथिलेटेड स्पिरिट लेकर वहाँ मलना चाहिये और फिर उस स्थानपर तथा अन्य भागोंपर फुलरकी मिट्टी या पाउडर छिड़क देना चाहिये।

यदि शय्याक्षत हो गया हो, तो निम्न उपचार करना चाहिये—

(क) डाक्टरी रुईकी गद्दियाँ लगाकर शरीरके उन भागोंपरसे दबाव कम करना।

(ख) दिनमें २ बार या अधिक क्षत-स्थानोंपर टिंकचर या सूकस कैलेण्डुला लगाना।

(ग) गरम और ठण्डा स्पञ्ज या रुई बारी-बारीसे क्षत स्थानोंपर लगाना। एक स्पञ्ज १ मिनटतक ही लगाये रहे। इस काममें कुल १५ मिनट लगाना चाहिये। कैलेण्डुला लगानेके दर्मियानमें इस क्रियाको कई बार किया जा सकता है।

(घ) यदि खाल उतरती हो, तो तीसी (अलसी) की पुलटिस पका देगी और इसे दूर कर देगी।

(ङ) गाजपर कलेण्डुला सिरेट फैला दो और उसपर डाक्टरी रुईकी एक गद्दी-सी रख दो; उसे आहत स्थानपर

रखकर पट्टी बाँध दो। प्लास्टर आदि कभी न लगाओ, उससे हानि हो सकती है।

खानेके लिये औषधि दो।

१०—फोड़ा, छाला, सूजन—

नरम करने और पकानेके लिये प्रत्येक ३-४ घण्टेपर आर्निका मिश्रित जलसे उसको सेंक दो। जब उसका मुँह खुल जाये, तो उसके बराबर गाजको टिंक्चर कैलेण्डुलामें डुबोकर उसपर लगाओ। खानेकी आवश्यक औषधि दो।

११—चोट—

यदि मामूली चोट लगी हो, जिससे बड़ी धमनियाँ आहत न हुई हों, तो अंगूठेसे दबा देनेसे रक्त बन्द हो जायगा; क्योंकि खूनके कतरे जमा हो जानेसे उनका मुँह बन्द हो जायगा; लेकिन यदि कोई बड़ी नस कट गयी हो या बड़ी चोट लग गयी हो, तो उसके उपचारकी ओर तुरन्त ध्यान देना अत्यावश्यक है। कभी-कभी ऐसी चोटें भयानक होती हैं और फिर तुरन्त शस्त्र-चिकित्साकी शरण लेनी चाहिये। यह केवल बाहरसे आहत होनेकी अवस्थाके सम्बन्धमें है, भीतरी गहरी चोटका विषय इस पुस्तिकामें नहीं आ सकता। भीतरी चोटके लिये अनुभवी और विशेषज्ञ सर्जनको बुलाना चाहिये और प्रथमोपचारकी दृष्टिसे केवल नार्मल सलाइन सल्यूशनका इन्जेक्शन देना चाहिये अथवा शरीरके किसी मांसल भागमें सल्यूशनका इन्जेक्शन दिया जा सकता है। कम भयानक अवस्थामें मलद्वारके द्वारा अँतड़ीमें सल्यूशनकी सूई लगानी

चाहिये। आहत व्यक्तिको गरम चीज़ पीनेके लिये देनी चाहिये; लेकिन किसी प्रकारका उत्तेजक पदार्थ न दिया जाये।

किसी बड़ी चोटके उपचारके समय रक्तवाहिनी नलियोंके स्थानको ध्यानमें रखना चाहिये। इनका चित्र मुख-पृष्ठपर दिया गया है। रक्तवाहि नलियाँ हृदयसे रक्त शरीरके समस्त भागमें पहुँचाती हैं और यह कार्य हृदयको अपने दबावसे कराना पड़ता है। इस प्रकार खून झटकेके साथ आता मालूम पड़ता है और उसका रङ्ग लाल होगा। नसों द्वारा शरीरके समस्त भागसे रक्त हृदयकी ओर लौटता है। इनसे निकलता रक्त एक धारसे बहता है और रङ्ग जरा काला होता है।

गहरी चोटोंमें रक्तवाहिनी नलियोंसे बहते रक्तमें झटका नज़र नहीं आयेगा। रक्त एकत्रित हो कर बहनेपर काला भी दिखलायी पड़ सकता है, जो कि लाल होना चाहिये।

बड़ी रक्तवाहिनी नलीसे रक्त-प्रवाह बहुत खतरनाक है; क्योंकि बगैर टांका दिये उसको बन्द करना सम्भव नहीं है। एक बड़ी नससे रक्त बहना इतना खतरनाक नहीं है; क्योंकि वह अक्सर रुक जाता है।

जब छोटी नलियोंसे रक्त बहे, तो शुद्ध जलसे धोकर टिंकचर कलेण्डुला लगा देना चाहिये। तब १ भाग कैलेण्डुलाका २० भाग जलमें लोशन बनाकर उसमें कपड़ा भिगोकर चोटपर लपेट देना चाहिये। इसको लोशनसे भिगोता रहे।

जब रक्त अधिक बहता हो तो देखना चाहिये, कि वह रक्त-वाहिनी नलीसे निकलता है या नसोंसे।

जब रक्तवाहिनी नली आहत हो तो शरीरके उस भागको ऊपर उठाये रखे, ताकि रक्त-प्रवाह कम हो। चोटको दबाये, लेकिन यदि कोई भाग टूट गया हो या कोई चीज़ घुस गई हो, तो फिर किसी प्रकारका दबाव नहीं डालना चाहिये। ऐसी अवस्थामें परोक्ष-रूपसे दबाव डालना चाहिये यानी दिलकी ओरकी किसी नलीको दबाना चाहिये, जिससे रक्त-प्रवाह रुके। पट्टी बाँधकर या किसी अन्य तरीकेसे इस दबावको जारी रखे। इस कार्यके लिये रबरकी नली सर्वोत्तम है।

जब रबरकी नलीसे नाड़ीपर दबाव डाला जाये तो यह ख्याल रखा जाये कि १५ मिनटके बाद उसे ढीला कर दिया जाये और यदि फिर रक्त बहे तो फिर उसे कस देना चाहिये, लेकिन १५ मिनटके बाद फिर ढीला कर देना होगा। याद रहे कि यदि किसी अङ्गमें रक्तका प्रवाह देरतक रोका जायेगा तो उसके सुन्न हो जानेका भय रहेगा। नसोंपर दीर्घ दबावसे लकवेकी आशङ्का रहती है।

किसी नससे खून बहनेपर यदि हड्डी नहीं टूटी हो या कोई चीज़ न घुसी हो, तो अंगुली और अंगूठेसे तुरन्त चोट दबा देना चाहिये। रोगीके हृदय और आहत स्थानके बीचके भागसे कपड़ा हटा देना चाहिये। उसपर डाक्टरी रुई और कपड़ा रखकर पट्टी बाँध देनी चाहिये, ताकि दबाव पड़ता रहे। यदि इतनेपर भी रक्त न बन्द हो तो घावसे नीचेकी ओर दिलके विपरीत एक और पट्टी बाँध दे।

घावके उपचारके पूर्व रक्त रोक देना आवश्यक है; लेकिन पूर्ण सावधानी रखनी होगी, कि घाव ज़हरीला न होने पाये।

यदि कोई हड्डी टूट गई हो या कोई चीज़ घुस गयी हो, तो खून रोकनेके लिये दबाव घावपर कदापि न डाले, खून चाहे नससे बहता हो या नलियोंसे।

हड्डी टूट जाने या गहरी चोट लगानेपर सर्जन द्वारा उपचार कराना चाहिये। प्रथमोपचारके लिये यह देख लेना चाहिये कि खून ऐसा तो नहीं बहता कि उसे रोका जा सके, तब आहत अङ्ग ठीकसे रखकर यह परीक्षा करनी चाहिये, कि उसे किसी प्रकारका आघात तो नहीं पहुँचा है और फिर तदनुसार उपचार करना चाहिये; फिर "हड्डी टूटना" शीर्षक लेखमें बताये गये तरीकेसे उपचार करना चाहिये।

साधारण चोटकी अवस्थामें रक्त-प्रवाह रोकनेके लिये निम्न प्रकारका उपचार करना चाहिये। जैसे—(क) बरफ या शीतल उपचार; (ख) दबाव; (ग) मोड़ना, (घ) अनुक्रमिक गद्दी, (ङ) टिंकचर बेनजाइन लगाना और (च) ईथर और अलकोहल लगाना।

(क) आध सेर बरफको महीन करके एक रूमालमें रख लो; चोटपर उसे रखो।

(ख) अंगुली-अंगूठेमें चोट लगनेपर साफ कपड़ा पानीमें भिगोकर कई तहमें लपेट देना।

(ग) मोड़ना, दबाना—इसका जिक्र नस और धमनीके कट जानेके सम्बन्धमें पहले ही कर दिया गया है।

(घ) घावपर तहोंकी गद्दी लगाना। घावके बराबर गाज या महीन कपड़ेकी एक गद्दी बना लो और एक-से-एक बड़ी ५ गद्दियाँ बनाकर घावपर रखते जाओ, फिर सबको पट्टीसे बांध देना चाहिये।

(ङ) टिंकचर वेनजाइन लगाना—कैलेण्डुलाके लोशनसे घावको साफ कर लो और फिर डाक्टरी रुईको टिंक-चर वेनजाइनमें भिगोकर धीरेसे घावपर चिपका दो, यह पट्टी घावसे चिपक जायेगी और खूनका बहना बन्द हो जायेगा। ४८ घण्टेतक यह लगी रहने दो। हटाना हो, तो अलकोहल या गरम पानीका प्रयोग करो।

(च) यदि कोई मामूली चोट लगी हो और साधारण उपायसे ही रक्त बन्द हो जाता है, तो फिर पट्टी बांधनेकी आवश्यकता नहीं है। पहले घावको कैलेण्डुला लोशनसे साफ कर लो। साफ कपड़े या कबूतरके पंखको किसी विष-नाशक लोशन या अलकोहलमें डुबोकर घावपर रख देना चाहिये। इससे घावमें विजातीय पदार्थ नहीं प्रवेश करेंगे और खाल सुरक्षित रहेगी। आवश्यकता पड़नेपर अलकोहल या गरम जलसे यह हटायी जा सकती है।

शरीरके अन्य भागोंसे खून बहना।

नाकसे खून बहना : यदि किसी प्रकारकी चोटसे रक्त प्रवाहित होता हो, तो नाकसे पानी खींचनेसे रक्त बन्द हो जायेगा। चेहरे तथा गर्दनको ठण्डे पानीसे धो डाला जाये। नाकसे जब पानी पिया जाता है, तो चूंकि दर्द होता है, इसलिये पानीकी मात्राके अनुसार थोड़ा-सा या १-२ चम्मच नमक मिला लेना अच्छा होगा और यदि इसपर भी खून न रुके तो उस नमकके पानीमें थोड़ी फिटकरी मिला लेनी चाहिये। पिसी हुई फिटकरी सूँघना भी लाभकर होगा।

माथे तथा गर्दनपर बरफ या बरफके पानीमें कपड़ा भिगोकर रखो।

चेहरेपर जो रक्तवाहिनी नली है, जो कि गाल और नाकसे बने कोणमें है, उसे अंगुलीसे दबाना चाहिये। अंगुलियोंसे नाकको आध घण्टे तक दबाये रहना चाहिये और रोगीको मुँहसे साँस लेने दे।

जब अवस्था कठिन हो, तो रोगीको सीधा बैठा देना चाहिये और दोनों हाथ ऊपरकी ओर उठा दे; यदि मूर्च्छित हो जाये, तो उसे लेटा देना चाहिये।

यदि खून नाकके भीतरसे बहकर गलेमें आ जाता हो और रोगीके मुँहसे बाहर निकलता हो, तो एक डाक्टरसे उसका

उपचार कराना चाहिये अन्यथा लापरवाहीका परिणाम भीषण हो जायेगा।

रुईमें 'हैमामिलिस' θ लगाकर नाकमें भर देना चाहिये। आध आउन्स जलमें एक-दो बूंद डालकर नाकमें डाल देना चाहिये।

खानेके लिये आवश्यक औषधि दी जाये।

दाँतके मसूढ़ोंसे खून बहना—हाइड्रोजेन परआक्साइड बहुत लाभकारी है। यदि यह बगैर बाहरी कारणसे बहता हो, तो आवश्यक औषधिका सेवन भी कराना चाहिये। दाँत निकालनेके बाद उसकी जड़से जब खून बहे, तो ठण्डे पानीमें 'हैमामेलिस' θ कुछ बून्द मिलाकर बार-बार मुँह धोना लाभकर होता है। यदि इसपर भी खून बहना जारी रहे, तो रुईको हैमामिलिस θ में भिगोकर उसपर रख दे और ऊपरसे ज्यादा रुई रखकर रोगीसे उसे दबाये रहनेके लिये कह दे।

बढ़ी हुई नससे खून बहना—रोगीको पीठके बल सीधा लेटा दो और हाथ-पाँव ऊपर उठा दो; जहाँसे खून बहता है, वहाँ दबाओ और एक गद्दी-सी बनाकर ऊपर और नीचे २ पट्टी बाँध दो। २० मिनटके बाद पट्टी खोल दो या ढीली कर दो।

फेफड़ोंसे खून बहना—यह फेफड़ोंमें चोट लगने या रोगसे भी हो सकता है। होनेपर रोगीके थूकमें खून दिखलायी पड़ेगा। रोगीको पीठके बल लेटा दो और उसे बिलकुल शान्त रहने दो। कसे हुए कपड़े खोल दो, ताजी हवा आने

दो, आवश्यक औषधि देकर उसे बरफ चूसने दो। यदि चोट लगी हो तो अनुभवी डाक्टरसे उपचार करायें।

पेटसे खून बहना—यह खूनकी कै करना है। यह किसी रोग या चोटसे हो सकता है। रोगीको बिछौनेपर लेटा दो और शान्त पड़ा रहने दो, नाभीपर बरफ या बरफके जलमें तौलिया भिगोकर रखो; बरफ चूसना चाहिये। कोई चीज़ खाने या पीनेको न देनी चाहिये। आवश्यक औषधि खानेके लिये दो।

१२—खरोंच लगनेसे खालके नीचेकी छोटी रक्तवाहिनी नलियोंपर आघात हो जाता है, यद्यपि खाल सुरक्षित बनी रहती है। इस प्रकारकी चोटमें दर्द होगा, रङ्ग बदल जायगा और सूजन आ जायेगी। यह चोट साधारण और गम्भीर हो सकती है। रक्तकी छोटी नलियाँ आहत होती हैं, खालमें रक्त भरता है, रङ्ग परिवर्त्तन हो जाता है और सूजन आ जाती है।

आर्निका θ लगा दो या उसके सल्यूशनमें कपड़ा भिगोकर रख दो; चार-चार घण्टे बाद कपड़ा बदलते जाओ।

यदि दर्द अधिक हो, तो कपड़ेसे गरम पानीकी सेंक लाभकर होगी। एक-दो दिन बाद सेंक बन्द कर दो और २ भाग ठण्डे पानीमें १ भाग विनेगार (सिरका) मिलाकर उसपर लगा दो।

यदि खाल भी छिल गयी हो, तो कैलेण्डुला लोशन लगाओ। दूसरी कोई चीज़ लगानेसे खतरनाक लक्षण दिखलायी पड़ेंगे।

आहत भागको आराम दो और खानेकी आवश्यक औषधि दो।

१३—जलना : यह विभिन्न रूपसे होता है लेकिन दो प्रकारसे विभागीकरणमें सब आ जाते हैं।

(क) जब आग या गरम पानीसे साधारण स्पर्श हो जाये और शरीरका वह भाग लाल हो जाये।

(ख) जलनेसे जब फफोले पड़ जायें।

(ग) जब खाल नष्ट हो जाये और मांस जलकर काला या पीला हो जाये।

जलनेसे आघात हो सकता है या रक्त विषाक्त हो सकता है।

अलसीका तेल चूनेके पानीमें बराबर बराबर मिलाकर लगानेसे आराम मिलता है।

जलेहुए भागको किसी साफ कपड़ेसे ढँके रहे या कोई पट्टी बांधे रहे ताकि उससे वायु निकलती रहे।

जब फफोले पड़ जायें तो उनमें छेद करके एक साफ कपड़े या गाज पर कलेण्डुला सिरेट रखकर तुरन्त पट्टी बांध दो ताकि उसको अधिक हवा न लगने पाये। पहली बार जो पट्टी बांधी उसे हटानेमें जल्दी न करो और उसके बाद दिनमें एक बारसे अधिक यह उपचार न करो।

खानेकी आवश्यक औषधि दो।

यदि अधिक भाग जल गया हो तो अधिक चतुर चिकित्सककी सहायता लेनी चाहिये। यदि कपड़ा चमड़ेसे चिपक जाये तो उसे कैंचीसे काट दो ताकि उसे निकालते

समय खाल फट न जाये। तब जले हुए भागपर तुरन्त अलसी का तेल और चनेका पानी या जैतूनका तेल लगाना चाहिये। यदि ये चीजें न हों तो गुनगुना दूध और पानी बराबर भागमें मिलाकर काममें लाओ जब कि अन्य प्रकारके उपचारकी तैयारी हो रही हो। जले भागपर ठण्डक पहुँचाना खतरनाक है। तब जले हुए घावके बराबर साफ कपड़ा या गाज लेकर एक पिंट पानीमें बड़ा चम्मच भर कर सोडाके सल्यूशनमें या १ प्रतिशत भाग पिक्रिक एसिडके सल्यूशनमें भिगोकर उस स्थानपर कई तहमें रखो। यह इस लिये किया जाता है कि रोगीको आराम मिले और जला हुआ भाग बहुत देरतक हवामें खुला न रहे। आधुनिक चिकित्सक टैनिक एसिडके हलके सल्यूशनको उपर्युक्त लोशनसे अधिक अच्छा समझते हैं। इसको रेशमी कपड़े या केलेके पत्तेसे ढँककर पट्टी बांध दो।

हाथ-पैरके जलनेकी अपेक्षा शेष भागका जलना अधिक खतरनाक है। ऐसी अवस्थामें प्रथमोपचारके बाद रोगीको अस्पताल भेज देना चाहिये।

१ पिंट जलमें १ आउन्स सूकस कलेण्डुला मिलाकर लोशन लगानेसे पकनेका डर नहीं रहता।

कँपकँपी, दर्दसे बेहोश हो जाना, अचेत हो जाना, हाथ-पैर जकड़ना, पीमिया आदि लक्षण खराब हैं।

चौकसी: जब किसी व्यक्तिके कपड़ेमें आग लग जाये तो उसे भागना नहीं चाहिये, बाहर या खिड़कीके पास न जाये उस व्यक्तिको तुरन्त लेटा देना चाहिये और जलता हुआ भाग

ऊपर रखो तब कम्बल या टाट आदि लेकर उस पर डाल देना चाहिये ताकि लपट बढ़ने न पाये और दब जाओ जब लपट दब जाये तो बताये गये उपचारको आरम्भ करना चाहिये।

१४—तेजाबसे जलना : सोडाबाइकारबोनेट, मैग्नीसिया या चूनेके पानीके सल्यूशनसे जला स्थान धोना चाहिये। यदि ये चीजें न मिलें तो उसपर गरम पानी डालकर पहले बताये गये तरीकेसे जलनेका उपचार करो।

१५—चूना, कास्टिक सोडा, पोटाश आदिसे जलना : यदि सम्भव हो तो तुरन्त नीबूके रस या सिरके (विनेगार) में बराबर पानी मिलाकर जलेहुए स्थानको धोया जाये, नहीं तो, पहले जले स्थानको पोंछ कर गरम पानी डालो।

१६—आँख जलना : छत या कमरेकी दीवालमें चूनेसे सफेदी कराते समय हो सकता है। तेजाब, गरम धातु तथा तेज़ रसायनिक पदार्थ (तरल) से भी हो सकता है।

चूनेसे जलनेपर १ पिण्ट गरम जलमें दो चम्मच चीनी या सिरका मिलाकर धोना चाहिये। जल्दी जल्दी खूब धोना चाहिये। आँखको छूना नहीं चाहिये, लेकिन यह काम धीरे और हलके हाथसे करना चाहिये। इसके बाद कुछ बूंद रेंडीका तेल आँखमें डालकर साफ कपड़ेकी गद्दी रखकर पट्टी बाँध देनी चहिये।

तेजाबसे जलनेपर १ पिण्ट गरम जलमें १ चम्मच सोडा बाइकारबोनेट डालकर उस सल्यूशन से धोना चाहिये। शेष उपचार जैसा पहले बताया गया है उसी प्रकार करना चाहिये।

पिघले हुए धातुसे जलनेपर नीचेकी पलकके बीचमें धातु बैठ जाता है। किसी साफ कपड़े या रूमालके कोनेसे धीरे से उसे निकाल देना चाहिये। यदि कोई भाग जलकर नष्ट हो गया हो तो जैतून या रेंडीके तेलके कुछ बूंद डालकर साफ कपड़ेकी पट्टी बांध देनी चाहिये।

आँखमें साधारण चोट, किसी कीड़े या विजातीय पदार्थका घुस जाना: पलकें हटाकर ऊपरकी पलकको धीरे से खींचो और नीचे की पलक को उसके नीचे कर दो और फिर छोड़ दो। इससे यह होगा कि बरौनी ऊपरकी पलकेके नीचे पड़ी चीजको साफ कर देगी। किसी साफ कपड़े या रूमालको गोला-सा बनाकर मुँह पर रखकर फूंको जिससे वह गोला गर्म हो जायेगा। इसको आँख पर रखो, तुरन्त आराम मिलेगा। 'आँख' शीर्षक लेख भी देखो। ऐसी अवस्थामें १ प्याला गुनगुना जलमें ५ बूंद ऐकोनाइट θ मिलाकर आँख धोना चाहिये।

१७—नासूर: आधुनिकतम अनुसंधान रेडियम और एक्स-रे के प्रयोगको वर्जित करता है। आवश्यक औषधि खाने को दीजिये। बाहरसे कलेण्डुला θ, काण्डुरंगो θ, हाइड्रास्टिस θ, हेमामेलिसका लोशन या ग्लिसरोल लगाना चाहिये। हाइड्रोजन पर-अक्साइडका प्रयोग भी किया जा सकता है। १ ड्राम सिट्रिक एसिड और ८ आउन्स जल मिला कर ऊंटके बालके ब्रशसे धोनेसे दर्द कम होना स्वीकार किया गया है। कपड़ेको इस तरलमें भिगो कर उसपर रखा जा सकता है। अलकोहलका लेप लगाओ।

१८—पक्षाघात : कभी भी चीरफाड़ न करो सड़े मांस आदिको दूर करनेके लिये हाइड्रोजन पर-अक्साइड छिड़को और बोरिकका सेंक दो। यह दिनमें दो बार करना चाहिये। कलेण्डुला θ को गाजमें लगाकर उसपर रखना चाहिये। जब घाव पूरने लगे तो कलेण्डुला मलहम लगायो खानेकी 'आवश्यक औषधि दो। 'काली-फोस' शक्ति बनाये रखता है और अनिद्रा रोग नहीं होने देता।

१९—फटना : शीत या शीतकालीन वायुसे हाथ, पाँव या चेहरे फटने लगते हैं और दरार-सी पड़ जाती है। धोनेके लिये गुनगुना जल चाहिये, न ज्यादा गरम न ज्यादा ठंडा। ग्लिसिरीनका प्रयोग करना गलती है। चर्बी लगानेकी सर्वोत्तम दवा है। इसके लिये कलेण्डुला लैनोलाइन या कलेण्डुला सिरेट काममें लाना चाहिये। दूधकी मलाई भी लाभ दायक है।

२०—चेचक : एक आउन्स बोरो-ग्लि-सिराइडमें १० बूंद हाइड्रैस्टिस θ या कलेण्डुला θ मिलाकर पंख या डाक्टरी रुईसे चेचकपर लगानेसे आराम मिलता है और दाग गहरे नहीं पड़ने पाते।

२१—शीतसे घाव होना : जाड़ेमें ठंडसे यह शिकायत प्रायः पैदा होती है। इसकी चिकित्सा बाहरसे तथा औषधि सेवनसे करनी चाहिये।

प्रत्येक दिन उन जगहोंपर मालिश करनी चाहिये ताकि रक्त संचालन बढ़े। कोल्डक्रीम, कलेण्डुला मलहम,

हमामेलिस सिरेट लगानेको उत्तम दवाएँ हैं। इन्हें कई बार और विशेषत: बाहर जानेके पूर्व लगाये। बोरैक्स और गुलाबजल मशहूर दवा है।

२२—आकस्मिक अवसन्नता: जब यह रक्तहीनता या दुर्घटनासे होता है बिल्कुल आकस्मिक होता है। किसी होनेपर इसका आक्रमण धीरे धीरे होता है।

रोगीको पीठके बल लेटा देना चाहिये सिर जरा नीचे की ओर हो। यदि खून न बहता हो तो रोगीको कम्बलोंमें रखो, और पैरोंके पास तथा बगलमें गरम जलकी बोतलें रखो। यदि बोतलें न हों तो ईंट गरम कर कपड़ेमें लपेटकर रखनी चाहिये। उनमें इतनी गरमी नहीं कि रोगी जल जाये। बीच बीचमें गुनगुने पानीमें बराबर ब्राण्डी मिलाकर पिलाते रहना चाहिये। स्वस्थ होनेके लक्षण स्वरूप पहले के हो सकती है जोकि शरीरमें गरमी आने, बेचैनी होने तथा करवट लेनेकी कोशिशके साथ आयेगी। जबतक वह काफी स्वस्थ न हो जाये उसे बैठने न दिया जाये।

अवसन्नतामें रक्त प्रवाहके लिये 'रक्त प्रवाह' शीर्षक लेख देखिये।

२३—मस्तिष्कपर आघात: यह आघात मस्तिष्क पर होता है जब किसी चोटके कारण मस्तिष्क क्रियाशील नहीं रह जाता; साधारण अवस्थामें आकस्मिक निर्बलता, और कम्पन होता है और रोगी गिर जाता है, खड़ा नहीं रह सकता है, अधिक भीषण आघातमें रोगी गिर जाता है, पीला हो जाता है

और बेहोश रहता है। चर्म ठण्डा और नाड़ी कमजोर मालूम पड़ती है।

इसकी दूसरी अवस्थामें बेहोशी क्रमशः आती है। श्वास की गति धीमी, मुश्किलसे और आवाज़ देती है तथा गाल और ओंठ फूल उठते हैं। नाड़ी धीमी और पूरी होती है। त्वचामें स्पर्श शक्ति नहीं रहती। शरीर गर्म रहता है और स्वाभाविक रंग बना रहता है। रोगीको जगाना नहीं चाहिये। वमन करानेकी चेष्टा नहीं करानी चाहिये और न होती है।

मस्तिष्क पर आघात होनेसे तुरन्त बेहोशी आ जाती है। श्वास धीमी, रुक-रुक कर, सांस खींचना; नाड़ी रुककर चलती है; आँखकी पुतलियाँ संकुचित; चर्म काटना या नोचना अनुभव करता है; शरीरका रंग पीला और ठण्डा। रोगी प्रश्नका जवाब दे सकता है और जगाया जा सकता है। वमन जल्दी-जल्दी होगा।

नाक या कानसे खून या पानी बहता हो तो समझना चाहिये मस्तिष्क पर अति भीषण आघात हुआ है। शोचनीय अवस्था होने पर बेहोशी गम्भीर निद्रा-सी हो जाती है, सांस जोर-जोर जल्दी चलती है और रोगीको जगाया नहीं जा सकता।

रोगीको पीठके बल लेटाना चाहिये। सब कपड़े ढीले कर दो और खूब ताजी हवा आने दो। सरको ठण्डे पानी से धोते रहो। उसे शान्तिपूर्वक पड़ा रहने दो और जगाओ नहीं। किसी प्रकारका उत्तेजक पदार्थ नहीं देना चाहिये।

आवश्यक औषधिका सेवन कराओ।

२४—ऐंठन: नवजात शिशुओंको यह रोग अक्सर हो जाता है। मूत्रेन्द्रियका संकुचित हो जाना बच्चोंके कपड़ों पिन या सुई होने से प्रायः यह रोग हो जाया करता है। अतएव इसका ख्याल रखना चाहिये और कारणकी खोज करनी चाहिये।

दाँत निकलते समय उन बच्चोंको यह रोग अधिक होता जिन्हें बनावटी दूध या अन्य खाद्य-पदार्थ माँ के दूधकके बजाय दिया जाता हो।

सर, गर्दन और सीनेपरसे तमाम कपड़े हटादो। काफी ताज़ी हवा आने दो और मुँह पर पंखा झलो। जल्दी-जल्दी पीठ रगड़ो और मुँह पर ठण्डा पानी छिड़को। यदि ताप बढ़ता हो तो सरपर बरफ रखो। साबुन या नमकके पानीका एनिमा लाभकर होगा। सरमें ठण्डा गीला तौलिया बाँधकर बच्चेको गरम जलमें नहलाना चाहिये। यदि गलेमें कोई शिकायत नजर आये तो एक मुलायम कपड़ा गरम पानीमें निचोड़ कर गलेपर रखना चाहिये और आध मिनटके बाद हटा लेना चाहिये। यह क्रिया ५-५ मिनटके बाद करनी चाहिये।

कीड़ोंसे भी बच्चोंको ऐंठन हो जाती है। नमकके पानीका एनिमा लाभ दायक होता है।

लक्षणके अनुसार खानेकी दवा दो।

२५—पैरका गोखरू: कसे जते न पहनो।

एक बड़े बर्त्तनमें साबुनके पानीमें आध आउन्स सोडा मिलाकर उसमें पाँवको अच्छी तरह धोना चाहिये। फिर खुरदरे तौलियेसे रगड़ रगड़कर धोना चाहिये। लगातार कई रातको रोज करो तो पैर कोमल होता नजर आयेगा। सोने जानेके पहले रूई सिरकेमें भिगोकर उसपर बाँध देना चाहिये। लापरवाहीसे गोखुरू काट देनेसे पक सकता है और पाँव सदाके लिये वेकार हो सकता है। अंगूठेके बीचके मुलायम गोखरूकी सबसे अच्छी दवा रातको कपूरका तेल लगा देना है।

२६—कटना: दाढ़ी बनाते समय या पेन्सिल बनाते समय उस्तरे या चाकूसे कटनेपर ठण्डे पानीसे धोकर कलेण्डुला θ लगा देना सर्वोत्तम है। यदि इतना काफी न हो तो फिटकरी रगड़ देनी चाहिये। अत्यधिक रक्त प्रवाहके अवस्थामें विषय सं० ११ देखिये।

२७—मोच: इसका मतलब यह है, कि जिस कटोरीनुमा हड्डीमें दूसरी हड्डीका सिरा अटका रहता है और हरकतें करता है वहांसे उसका हट जाना। अतएव मोच किसी गांठ या जोड़ पर चोट पहुँचनेसे होता है। मरोड़, मोच और हड्डोके टूटनेकी दशाओंका अन्तर जानना आवश्यक है। निम्न बातें ध्यानमें रखनी चाहिये :—

(क) पीड़ा, यह तीनों दशाओंमें होती है।

(ख) गांठ या जोड़के स्वाभाविक रूपमें परिवर्तन यानी किसी एक जगह अस्वाभाविक रूपसे बढ़ना और दूसरी

जगह अधिक दबा हुआ रहना जिससे उस अंगका बड़ा या छोटा हो जाना। मरोड़ या हड्डी टूटनेकी दशामें ऐसा नहीं होता।

(ग) मोच आ जानेपर जोड़ हिल नहीं सकता। हड्डी टूटनेपर आहत भागको चलाने फिरानेसे कुछ गड़ता मालूम होता है। मरोड़में ऐसा आभास नहीं मिलता।

(घ) स्वाभाविक रूपमें हड्डीको अपेक्षा टूटी हुई अधिक हिलडुल सकती है, जब कि मोचमें वह और भी कम हिलडुल सकेगी।

(ङ) मोच लगने पर हड्डीको पूर्वावस्थामें लाया जा सकता है, टूटी हड्डी पूर्वावस्थाको प्राप्त नहीं हो सकती।

(च) टूटी हुई हड्डी छोटी पड़ जाती है, जब कि मोचकी अवस्थामें हड्डी पूर्वावस्थाकी अपेक्षा बड़ी हो जायगी अथवा पूर्ववत् रहेगी।

(छ) मोचके बाद सूजन आनेपर जोरसे दबाने पर हड्डीका सिरा मालूम किया जा सकता है। मरोड़ आनेपर जो सूजन आयेगी वह कम और मुलायम रहेगी। मरोड़में जोड़की हरकत बनी रहेगी यद्यपि दर्द होगा और हड्डी छोटी या बड़ी नहीं होगी।

रीढ़में मोच आना अत्यन्त भयानक है क्योंकि उससे स्नायु मण्डलके रोग हो जानेका खतरा रहता है।

जब बाहर ऐसी चोट लगी हो कि घाव हो जाये और हड्डी भी उखड़ गयी हो तो उसे कठिन मोच कहेंगे। ऐसी चोट अत्यन्त खतरनाक होती है।

कुछ बच्चोंकी कण्ठास्थि (गलेकी हंसली) अक्सर उतर जाया करती है, खासकर जिन्हें सूखारोग हुआ करता है। बड़े होनेपर भी जब एक बार मोच आ जाती है तो फिर बार वही घटना होनेकी आशंका रहती है।

मोच दूर करने और हड्डीको पूर्वावस्थामें लानेकी तदबीर शीघ्र करनी चाहिये ताकि सूजन बढ़कर हड्डीको सदाके लिये उसी अवस्थामें न रख दे कुछ मामले तो ऐसे होते हैं कि मोच आनेके बाद ही हड्डीको उचित स्थान पर खींच कर बैठाया जा सकता है। बच्चेके गलेकी हड्डीको भी भुजाकी ओर धीरेसे खींचने पर बैठाया जा सकता है।

अनुभवहीन व्यक्ति द्वारा हड्डीको पूर्ववत् बैठानेकी कोशिश करना खतरनाक है क्योंकि स्नायु या रक्त वाहिनी नलियोंको हड्डी खींच कर भंग किया जा सकता है।

मोच यानी हड्डी उखड़नेपर प्रथम उपचार यह होगा कि उचित पट्टी द्वारा उस अंगको आराम दो और फिर उपचार आरम्भ करो। किसी अनुभवी व्यक्तिसे २४ घण्टेमें उसे पूर्व-वत् बैठाओ। खानेके लिये यथा लक्षण आरनीका, रूटा दें।

२८—कर्णशूल :—

(क) कानमें मुलीन तेलकी कुछ बूंद डालकर रूई लगादो।

(ख) डाक्टरी रूईपर पीपरमेण्टका सत् कुछ बूंद डालकर कानमें खोंस दो।

दर्दके कारण और लक्षणके अनुसार खानेकी आवश्यक औषधि दो।

(ग) पानीमें लहसुन डालकर उबाललो और उस पानी में कपड़ा भिगोकर सेंक देना चाहिये।

२९—अपरस :—कमसे कम साबुनका प्रयोग करो। हाइड्रास्टिस, स्कूकुमचक, हेमामेलिस, कलेण्डुला और एचिनेसिया का सिरेट बनाकर ऊपरसे लगाये। इस कठिन अवस्थामें केवल लगानेकी दवा तब तक लाभ नहीं करेगी जबतक खानेकी आवश्यक औषधि नहीं दी जाती। गीले अपरसमें हाइड्रास्टिस θ लगाये और खानेकी दवा देना चाहिये।

३०—मिरगी रोग :—गले और सीने परके तमाम कपड़े ढीले कर दो। एक बड़ासा कार्क या चम्मचमें रूमाल लपेटकर दातोंके नीचे दबाये, अन्यथा दाँतसे जबान कट जानेका भय रहेगा। रोगीको फर्श पर लिटा और आस पास कोई ऐसा सामान नहो जिससे रोगीके हाथ पाँव झटकारने पर चोट लगनेका डर हो। फिरसे अन्तमें होश आनेके पूर्व कै हो सकती है और गला धंस जानेसे रोगीको मृत्यु हो जानेका डर रहता है। ऐसी अवस्थामें रोगी जैसे ही उलटी करनेवाला हो तुरन्त उसी करवट लेटा देना चाहिये। आवश्यक औषधि खिलाओ और यदि न खा सके तो एक साफ कपड़ेमें गोलियाँ तोड़कर उसे सुँघाओ। जब बेहोशी दूर हो जाये तो रोगीको जितनी देर हो सके सोने दो। आक्रमणके बाद रोगी जगाना और भी खतरनाक हो सकता है।

३१—आँखें :—(विषय सं० १६ देखिये)।

(क) साधारण 'आपथैल्मियाँ' और 'कांजंक्टिविटिस' के रोगमें आँखको चमचमाहटसे बचाओ बराबर नीले या धूमिल रंगका चश्मा लगाओ एक साफ कपड़ेके टुकड़ेको टरमेटिकमें भिगो कर डोरेसे माथेपर बाँध दे ताकि आँखपर लटकता रहे।

(ख) कोलीरियम या आँख धोनेकी दवाके लिये १ चम्मच गुनगुने जलमें १५ बूंद कलेण्डुला डालो। बोरोसिक लोशनसे यह बेहतर है।

(ग) अग्ल्युटिनेशन : आँख साफ करनेके लिये कलेण्डुला लोशन काममें लाइये। रातमें सोनेके पहले पंखसे कालेण्डुला मलहम पलकों पर लगाइये।

(घ) होर्डियोलम : खानेकी औषधि ही उत्तम है। कलेण्डुला लोशनका डाक्टरी रुईसे गरम गरम सेंक आराम पहुँचाता है।

३२—मूर्च्छा :—यह भय, आकस्मिक आघात, रक्तक्षय, भीषण वेदना या पेट पर जोरदार आघात होनेसे आती है। हृद्‌रोग, मासिक स्राव की गड़बड़ी, तथा पेटकी गड़बड़ीसे भी मूर्च्छा आती है। गन्दा वातावरण, एक कमरेमें अधिक जनवास, दुर्गन्धि तथा बुरे शोरगुलसे भी मूर्च्छा आ सकती है।

तुरन्त ही रोगीको इस प्रकार लेटा देना चाहिये कि सरकी ओर नीचा हो और शेष शरीर उठा हो। ताजी

हवा आनेदो और चेहरे पर ठण्डा पानी छिड़को। यदि सम्भव हो तो धीरे से रोगीको कमरेके बाहरले जाओ हाथ पाँव को खूब रगड़ो जलते हुए म्युर पंखका धुआँ नाकसे सुँघाना लाभ-कर होता है। स्मेलिंग साल्ट दो-दो मिनट बाद आध मिनट तक नाकपर रखना अच्छा है। कमर और गर्दन पर कपड़ा कसा हुआ न रहे, उसे हटा देना चाहिये। रोगीको ऐसा रखो कि सर नीचे रहे या शेष शरीरको ऐसा उठाओ कि सरको ओर रक्त अधिक संचालित हो। यदि रोगी भी सके तो पानीमें एक चम्मच ब्राण्डी मिलाकर दो, जबरन यह न पिलाओ। खानेकी औषधिको दो या जबानके नीचे रखदो।

३३—भगन्दर :—शौच जानेके बाद कलेण्डुला लोशनसे खूब साफ करके धोइये और फिर कलेण्डुला मलहम लगाइये। खानेकी आवश्यक औषधि दो।

३४—कानमें विजातीय पदार्थ : कानमें प्रायः मक्खी या मच्छड़ घुस जाते हैं। चींटी या कीड़े भी घुस सकते हैं। बच्चे अनाजके बीज या चावल आदि कानमें भर लेते हैं।

जिसकानमें यह शिकायत है उसे ऊपर रख रोगीको दूसरी करवट लेटादो ऊपर फिर कानमें गरम पानी डालो। इस तरह करने पर विजातीय पदार्थ बाहर निकल जाता है।

कानमें थोड़ा-सा सरसोंका तेल या जैतूनका तेल गरम कर डाले और कुछ देर कानमें रहने दे फिर साफ चिमटोसे

विजातीय पदार्थ निकालनेमें आसानी होती है। यदि तेल न मिले नमकका पानी गरम करके डालो।

जब यह उपाय काममें न आये तो पिचकारी लगानी चाहिये। लेकिन यह कार्य किसी अनुभव हीन व्यक्तिको न करना चाहिये। अन्यथा खतरा उत्पन्न हो सकता है।

३५—आँखमें विजातीय पदार्थ : मक्खी, धूल, कोयला आदि आँखमें पड़ जाते हैं। यदि चीज़ दिखलायी पड़ती हो तो विषय संख्या १६ के पाँचवे अंशके अनुसार कार्य करो। गुनगुना कलेण्डुला लोशनसे बार बार धोना भी लाभकर है। छोटी-सी प्यालीमें लोशन लेकर उसमें आँख डुबादो फिर पलकें घुमाओ ताकि पुतलीपर लोशन पड़े तथा पलकोंके नीचेका भाग भी धुल जाये।

३६—हड्डी टूटना : 'मोच' शीर्षक विषयमें मोच, साधारण चोट और हड्डी टूटनेकी भिन्नता पर विचार किया गया है।

(क) साधारण हड्डी टूटना : जब हड्डी टूट गयी हो लेकिन और कोई चति नहुई हो या बाहर से कोई ऐसी चोट न लगी जिससे घाव हो गया हो। ऐसी चोट न लगी हो जिससे घाव हो गया हो। ऐसी अवस्थाका प्रदर्शन चित्र नं० ६ में किया गया है।

(ख) कठिन अवस्थामें हड्डी टूट कर बाहरकी ओर आ जाती और त्वचा भंग हो जाती है।

(ग) कठिनतम अवस्थामें मांसपेशियाँ तथा रक्त-बाहिनी नलियाँ आदि भी छिन्नभिन्न हो जाती हैं। बाहरी

खालसे हड्डी तक घाव हो जाता है। ऊपरकी कठिन अवस्था में भी ऐसा हो सकता है।

(घ) कभी-कभी हड्डी कई हिस्सोंमें टूटजाती है जैसा कि चित्र नं० ७ दिखाया गया है।

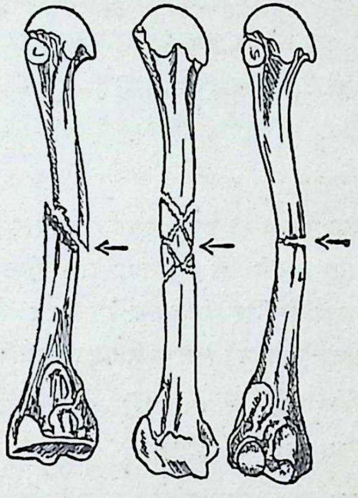

चित्र नं० ६ ७ ८।

(ङ) हड्डी टूटकर एक दूसरेमें घुस जाती है।

(च) बच्चोंकी मुलायम हड्डी टूटे नहीं बल्कि मुड़ जाये जैसा कि चित्र नं० ८ में दिखलाया गया है। ऐसी अवस्थामें अंगकाम करता है और कोई चीज गड़ती नहीं मालूम होती।

जोड़की हड्डीका टूटना अत्यन्त खतरनाक है।

इन दशाओंमें आहत भागको पूरा आराम देना आवश्यक है ताकि और कोई क्षति न होने पाये। इसलिये जब तक उस भागको खपच्चियोंसे बाँध न दिया जाये रोगीको हिलाना ठीक नहीं है। यदि आवश्यक खपच्ची न मिले तो कड़ी दफ्ती पर कागज लगाकर घासका बण्डल बनाकर या किसीपेड़की छोटी टहनिहोंकी मददसे आहत भागको बाँध देना चाहिये। बाँधनेके बदले उस पर साफ कपड़ा रखना चाहिये।

हड्डी टूटने पर उसी स्थानपर उपचार करना चाहिये जहाँ कि दुर्घटना हुई हो। यदि उसे हिलाने डुलानेको कोशिश की गयी तो फिर अवस्था और खराब हो सकती है और हड्डी इधर-उधर हटनेकी कठिन दशा उपस्थित करदेगी।

यदि खून बहता हो तो पहले उसीका उपचार करना चाहिये। विषय सं० ११ देखिये।

आहत भागको ठीक रखिये और यदि कोई आघात मिला हो तो विषय सं० ३२ का अनुसरण करो।

२७—आहत अंगको उसकी पूर्वावस्थामें इस प्रकार ले आनेकी चेष्टा करो कि और क्षति न पहुँचने पाये। खपच्चियाँ इस प्रकार बाँधो कि उसकी लम्बाई घावके ऊपर और नीचे वह जोड़के अन्त तक हो। खपच्ची बाँधनेके पूर्व खपच्ची और त्वचाके बीच गद्दा रखो। खपच्चीके समान रूई, नारियलके

छिलके और कम्बलके टुकड़े रखकर गद्दी बनाओ खपच्ची बाँधते समय पट्टी ऐसी कसी नहो घावपर दबाव पड़े या रक्त संचालन में बाधा उपस्थित हो।

यदि खून बहता हो रोगीके कपड़े काटकर हटा देना चाहिये अथवा घाव बाँधते समय उन्हें रहनेदे ताकि पट्टीमें वे भी शामिल हो जायें। यदि पट्टी और खपच्ची बाँधनेका कोई साधन नहो आहत अंगको शरीरके साथ बगैर हिलाये डुलाये बाँध देना चाहिये। यदि एक पैर आहत हो उसे दूसरेके साथ बाँध दे।

यही बाँधनेकेलिये आहत अंग कभी उठाये नहीं। यदि अंगुलियाँ दूसरी ओर पट्टी पकड़नेको न पहुँचे तो सावधानी किसी छड़ी या कार्डबोर्डसे उसे ठेल दे।

पैर, पसली, रीढ़ या सरकी हड्डी टूट जानेपर रोगीको केवल स्ट्रेचर पर पट ही उठाओ।

३८—सर फूटनेपर पहले बाहरी घावका उपचार करो। यदि साधारण चोट हो फट गया हो तो खानेकी औषधि देना ही अच्छा होगा। सख्त चोट लगनेपर रोगी प्रायः बेहोश रहता है। किनारे पर सूजन होती है और हड्डीके हटनेसे जो जगह खाली हो जाती है वह मालूमकी जासकती है। गिरने या चोट लगनेपर कोई बाहर घाव न हो लेकिन नाक, कान या मुँहसे पानी-सी चीज बहती हो, साथ ही बेहोशी और सांस मुश्किलसे लेता हो तो समझ लेना चाहिये कि

कपाल फट गया है और बहुधा आहत व्यक्तिका प्राणान्त हो जाता है।

एक स्ट्रेचर ले आओ या किसी डाक्टरके पास या हस्पतालमें ले जाओ। ऐसी अवस्थामें प्राथमिक उपचार यही हो सकता है कि सरपर शीतल जल डाले, हाथ पैरमें गर्मी पहुँचाये और उसे शान्ति हो। उत्तेजक पदार्थ नहीं देना चाहिये।

३९—जबड़ेकी एक ओर या दोनों ओरकी हड्डी टूट सकती है। यदि कठिन अवस्था होगी तो मसूढ़ोंमें चोट मालूम होगी और खून बहता होगा। दर्द और सूजन होगी तथा जबड़े आसानीसे हिलाये नहीं जा सकेंगे।

प्राथमिक उपचारके लिये नीचे दो रूमाल लेकर दो छोटी पट्टी बनालो। पट्टीका बीच दाढ़ीमें हो और गटठी सरपर बंधी हो। दूसरी पट्टीका बीच दाढ़ीके ऊपर हो और दोनों सिरा पीछे ले जाकर गर्दन पर बांध दे। अब दोनों पट्टियोंके सिरे को एक दूसरे से सीधे बांध दो।

खानेकी आवश्यक औषधि दो।

४०—रीढ़की चोट—रीढ़ पर सीधी चोट लगनेसे या गिर पड़नेपर गलेकी हड्डी टूट जानेपर भी रीढ़में चोट आती है। रोगीको शान्त रहने दो। यदि वह बेहोश हो गया हो तो उसे उठाओ मत। उसकी जंघाएँ, पैर, घुटने, टखने यदि सब एक साथ बाँध दो। उसे कपड़े ओढ़ा दो और किसी

छायेदार स्थानमें ले जाओ फिर पासके हस्पतालमें पहुँ-चाओ। गरम दूध या चाय पीनेकेलिये दो।

४१—कण्ठास्थिकी चोट: दोनों या एक ओरकी हड्डीमें चोट लग सकती है। आहत कंधा पहलेसे अधिक चौड़ा हो जाता है और आगे या पीछेकी ओर गिर जाता है।

कपड़ेकी एक बड़ी गद्दी कांखमें रखो, यदि दोनों ओरकी हड्डी टूटी हो तो दोनों ओर गद्दी रखो फिर कंधोंको इसप्रकार पट्टीसे बांधो कि वे अच्छी तरहसे पीछेकी ओर खिंच जायें। पट्टीको प्रत्येक कंधेको कई पर्तसे बांधे ताकि वह आगे और पीछे दोनों ओर हो जैसा कि चित्र नं० ८ में दिखलाया है।

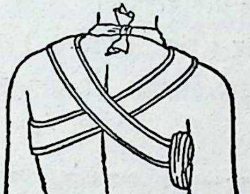

चित्र नं० ८।

४२—पसलीकी हड्डी टूटना: गिरने, आघात होने या हड्डियों पर भारी चीज पड़नेसे यह हड्डी टूट सकती है। यदि उसपर सीधी चोट पहुँची है तो हड्डी आहत स्थानपर ही टूटेगी। गाड़ीके चक्केसे दबनेपर या किसी चीजसे दबने पर

हड्डी मोड़पर या बीचसे टूटती है। इस प्रकारकी चोटमें खतरा यह रहता है कि टूटी हड्डी अन्दर घुस जाये और फेफड़े, यकृत, प्लीहा आदि अन्य भागोंको आहत कर दे।

८ इञ्च चौड़ी और लगभग १२ फीट लम्बी पट्टी लेकर पेटको नीचेसे लेकर हाथकी बगल तक कंधेसे लम्बा कर शरीर बांध कर यदि लम्बी पट्टी न मिले तो तौलिये ८—१० इञ्च चौड़े तहकर, सेफ्टी पिन लगा कर बांध देना चाहिये। स्ट्रेचर पर लेटा कर आहत व्यक्तिको शीघ्र डाक्टरके पास या हस्पताल भेज देना चाहिये।

४३—ऐसी दुर्घटनाओंके लिये होमियोपैथिक औषधियाँ :—

आर्निका :—यदि बाहर घाव न हो आर्निका लोशन बाहर से लगाये और ६ शक्ति (पोटेन्सी) तक खानेके लिये दे। यदि बाहर घाव हो गया हो तो कलेण्डुला लोशनका प्रयोग करे।

हाइपेरिकम :—गोली लगनेपर, खूनी घाव हो जानेपर सम्पूर्ण अंग जैसे अंगुली-अंगूठे आदिमें घाव आ जानेपर बाहर इसका लोशन लगाये और खानेके लिये दे।

रूटा :—हड्डी, जोड़ या पेशियोंपर चोट आने पर खानेके लिये दे और इसीका लोशन बाहरसे लगाये।

रस्टाक्स :—जोड़, मांसपेशियाँ, नलियाँ, धमनियाँ आदि में यदि चोट न आयी हो और घाव बाहर न हो गया हो यही खानेको दो और उसीका लोशन लगाये।

सिम्फाइटम :—आँख पर चोट लगने से खानेको दो। आहत आँखपर इसका लोशन एक साफ कपड़ा भिगोकर रखे और ऊपर रेशमी कपड़ा या केलेका पत्ता रख कर पट्टी बाँध दे। हड्डियोंके टूटने आदिपर भी यह लाभकारी है।

लीडम :—तेज हथियारसे घाव हो जानेपर, बाहरसे लोशन लगाये और खानेके लिये दे। कीड़ोंके काटने या डंक मारने पर भी यह लाभकर है।

बेलिस पेरिनिस :—धमनियोंके खराब होने या नीले काले दाग शरीरपर पड़ जानेसे खानेके लिये दवाई और लगानेके लिये लोशन दें।

ऐकोनाइट ६ :—आघात आनेपर यह पहली औषधि है। इसके बाद आर्निका ६ ठीक लाभ करेगी।

४४—आँत उतरना (हार्निया) :—जब कोई अंग अपने ढके स्थानसे बाहर निकल आता है तो अंगरेजीमें उसे हार्निया या "रप्चर" कहते हैं। लड़कों या वयस्कमें यह समान रूपसे पाया जाता है लेकिन स्त्रियोंमें यह प्रायः नहीं रहता। व्यूमरकी भाँती वह अंग आगेकी ओर निकल जाता है। हार्निया, कई प्रकारका होता है लेकिन साधारण तथा पुरुषके पेड़ू और स्त्रीके उरुसे जरा नीचेके भागमें होता है। इसे इङ्गुइनल हार्निया कहते हैं और पेड़ूके एक भागसे आँतके हट-जानेसे ऐसा होता है। पुरुषमें बढ़े हुए अण्डकोश तक चली जाती है। इस आँतको या तो पूर्वावस्थामें पहुँचादे या पेड़ूके भीतर पहुँचादे, तभी यह कहा जा सकता है कि यह ठीक

हो जायेगी। जब आंतका कोई हिस्सा नीचे ही रह जाता है तो फिर कहा जाता है कि वह कम नहीं की जा सकती। जिन मांसपेशियोंसे होकर वह नीचे गयी है जब वे संकुचित होती हैं तो उसे संकोचन कहते हैं।

फीमोरल हार्निंयामें यह और नीचेसे उतरती है जहाँपर इङ्गुइनल हार्निया स्पर्शकी जाती है और जहाँ पर रक्तवाहिनी नलियाँ पेड़ूसे जांघमें जातीं हैं। इस प्रकार आँत गिरनेसे अण्डकोषमें नहीं जाती।

अम्बीलिकल हार्निया नाभीमें होती है। यह अक्सर बच्चोंमें या जिन स्त्रियोंको अधिक सन्तान होचुकी हैं उनमें पायी जाती है;

पेड़का आपरेशन होनेके बाद जब पेड़ूकी दीवाल कमजोर ही बनी रह जाती है तो आपरेशनके स्थानपर हार्निया हो सकती है जिसे 'वेंट्रल हार्निया' कहते हैं।

मस्तिष्कके कुछ जिंडुली बाहरकी ओर हट जाती हैं और वहाँ भी हार्निया हो जाता है।

मस्तिष्कके हार्नियाको छोड़कर अन्य स्थानोंमें प्राथमिक उपचार करनेसे अधिक क्षतिका खतरा दूर हो जाता है। यदि संकोचन आरम्भ हो गया हो तो फिर इस उपचारकी आवश्यकता नहीं है उसे किसी सर्जनके पास ले जाना होगा।

रोगी जब लेट जाता है या उसे पूर्ववत बनानेकेलिये धीरेसे दबाया जाता है तो प्रायः आँत लौट जाती है। यदि

ऐसा नहीं हो सके तो रोगीको बिछौनेपर लेटा दो। पेशाव करा मूत्राशय खाली कर दो, कन्धोंके नीचे तकिये रखकर उन्हें ऊपर उठादो, जंघोंको पेटकी ओर ले आओ और दोनोंको मिलादो जिससे मांस पेशियाँ शिथिल होंगी। बरफ रखनेसे आँत लौटेगी। यदि बरफका असर न हो अंगुलियोंसे सूजन को पकड़लो और संकुचित करो कि सूजनकी वायु तथा अन्य चीजें पेटमें चली जायें। यदि सूजन अधिक हो तो उसे हथेली से दवाओ। इस प्रकार पकड़ कर उसे ऊपरकी ओर खींचो और फिर नीचेकी ओर ले जाओ। याद रहे कि बल लगाकर न दबाया जाय वरना ट्यूमर किसी अन्य स्थानकी ओर खिसक जायेगा। यदि यह भी असफल रहे तो रोगीको गरम पानीके टबमें डाल दो और फिर उसी रीतिका अनुसरण करो। ट्यूमर क्रमशः लौटेगा, एकाएक पूरा नहीं दब जायेगा। जब इसप्रकार आँत बैठ जाये तो फिर एक गद्दी रखकर पट्टी बाँध दे। ट्रास (एक प्रकारकी पेटी) सदैव बाँधनेकी सलाह दो।

उचित खानेकी औषधिने अक्सर बगैर किसी अन्य तद्-बीरके अच्छा कर दिखाया है। लेकिन 'संकोचन हार्निया' में चीरफाड़ ही कारगर होगा।

'अम्बीलिकल हार्निया' में चौड़े मुँहकी बोतलका बड़ा कार्क या उसी शकलका रांगा लेकर सूजन पर मुलायम कपड़ों में लपेट कर रखदे और उसे यथा स्थान रखनेकेलिये पट्टीसे बाँध दो चिल्लाने या उसपर जोर डालनेकी कोशिश न की जाये। बच्चेको इसे बराबर बंधा रहने दे। ट्यूमर बच्चेके बड़े होनेके

साथ ही कम होता जायेगा। यह हार्निया संकोचनको प्राप्त हो सकता है और उसका उपचार पेड़ूके हार्नियाकी भाँति करना चाहिये।

खानेकी आवश्यक औषधि भी बाहरी उपचारके साथ देना चाहिये।

बड़ोंके 'अंबीलिकल हार्निया' को पहले कम करना चाहिये और फिर इसके लिये बनायी गयी पेटीको बराबर इस्तेमाल करना चाहिये। यदि संकोचन आरम्भ हो गया है तो आपरेशन अनिवार्य है।

इस प्रकारके हर्नियामें भोजन हल्का और अल्प देना चाहिये।

४५—खाज :—छूतसे फैलनेवाली बीमारी जो कि 'एकटस स्कैबी' नामक कीड़ेसे पैदा होती है। जिनको यह हो जाती है उनसे यह अन्य लोगोंको बहुत जल्दी लग जाती है। यह प्रायः चेहरेपर नहीं होती लेकिन बच्चोंको सिरसे पैर तक हो जाती है।

खानेकी उचित औषधि सर्वोत्तम है और तुरन्त लाभकारी होती है। शरीर खूब साफ रखो और कपड़े बिछौने आदि विषमारक लोशनसे प्रति दिन धोना चाहिये। रोज गरम जलसे स्नान करें; सूखे मुलायम तौलिये से देह सुखायें और जैतूनके तेलमें कलेण्डुला डालकर लगाये। खाजमें सदैव तेल लगाकर चिकना रखे विशेषतः सोते समय रातको। कुछ

लोग गंधकका मलहम लगानेकी सलाह देते हैं लेकिन अधिक प्रयोगसे एक प्रकारका रोग हो जानेका डर रहता है; क्योंकि गंधकसे खालमें सूखापन आता है।

४६—कमरका दर्द :—पीठके पास गरम जलकी बोतलें रखकर रोगीको गर्म रखो। मालिश—रस-टाक्स लेपकी जोरसे मालिश करें, मांस खाना बन्द करदें, पेट साफ रखें और बार्ली जल तथा तरल भोजनसे पेशाब अधिकाधिक होने दें। आवश्यक औषधिका सेवन करायें।

४७—मुँहकी सफाई :—बीमारीमें मुँह और दाँत साफ करनेके लिये साधारण नमक लाभकारी और हानि रहित है। गरम पानीमें घोल कर कुल्ला करना अच्छा है। एक गिलास जलमें १ चम्मच हाइड्रोजन-पर-आक्साइडसे कुल्ला करना। पानीमें पोटेसियम परमैंगनेटके टुकड़े डालकर पानी लाल कर कुल्ला करनेसे मुँहकी सफाई अच्छी होती है, विशेषतः जब मसूढ़ों और गालके भीतर मवाद हो और सांसमें गंध आती हो।

४८—नेटिल रैश :—अर्टीकेरिया विषय संख्या ५२ (च) देखो। (पित्ति उछलनेमें बाहरी उपचारकी औषध विशेष)।

४९—बवासीर :—चिकित्सा शास्त्रमें इसे हैमोडायड्स कहते हैं। बाहरी बवासीर गुदाके बाहर ही देखा और मालूम किया जा सकता है। अन्दूरूनी बवासीरका पता तबतक नहीं लगता जबतक खून नहीं निकलने लगता और

इससे भीषण दर्द हो सकता है। ऐसकुलस और हेमामेलिस का मलहम लगाये। संक्रामक रोगमें फाइटोलक्का मलहम कारगर पाया गया है। आवश्यक औषधि खानेको दें।

५०—विष :—

विष पानकी कुछ दशाओंपर यहाँ विचार किया जाता है। विष या तो आत्महत्या, हत्या केलिये या घटनावश खाया जाता है। धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा विष खाते रहनेसे विषपान संक्रामक हो जाता है। यदि प्रत्यक्ष लक्षण न मालूम पड़े तो क्या विष खाया गया है मालूम करना कठिन हो जाता है।

प्राय: विष या तो एसिड (Acid) (तेजाबी) या अल्कली (Alkali) (खार) होता है। यदि पहले यह मालूम हो जाय तो विष मारनेकी चेष्टा करनी होगी।

एसिड विष पानकी अवस्थामें नीबू और जल, खरिया मिट्टी, मैग्नीसिया कार्ब या दीवालका प्लास्तर भी बार-बार देना चाहिये। अल्कली विषपानमें एसिड देना चाहिये जैसे लाइम जूस, लेमन जूस या बराबर पानीमें सिरका मिलाकर ग्लास भरकर बार बार पिलाना चाहिये।

(१) रोगीके श्वासकी गतिकी परीक्षा करो। यदि श्वास न चले तो बनावटी रीति से संचालन करो।

(२) यदि ओंठ या मुँहमें छाले पड़े हों तो वमन न करायें; यदि यह न हो तो गलेमें सरसराहट पैदा कर कै करायें। यदि इतने पर भी कै न हो तो नमक का पानी या

पानीमें सरसोंका तेल डालकर जबतक कै न होने लगे हर १५ मिनट बाद पिलायें।

(३) यदि विषके नाम का पता न चले तो (क) दूध या पानीमें कच्चा अण्डा घालकर दे, (ख) आटा और मलाई मिलाकर पिलाये, (ग) कड़ो चाय, (घ) पर्याप्त जल पिलाये।

(४) यदि रोगी ऊंघता हो तो उसे पकड़ कर चलाते रहो।

(५) यदि गलेमें सूजन आ जाये तो गलेपर गरम सेंक दो ताकि सांस न रुके।

विष।	प्रतिकार।
एसिड हाइड्रोक्लोरिक „ नाइट्रिक „ सलफ्युरिक (गन्धक)	धोनेवाला सोडा, खानेवाला सोडा, मामूली चूना, मैग्नीसिया कार्बोनेट, दूध, अण्डेकी सफेदी; बादमें जैतूनका तेल। कै करानेकी चेष्टा न की जाये। मर्फियासे दर्द कम करे। यदि मानसिक आघात हो तो उसका उपचार करे।

विष	प्रतिकार
अल्कली (कास्टिक) तेज़ अमोनिया कास्टिक पोटाश ,, सोडा	सिरका, सिट्रिक एसिड, संतरेका रस, टारटारिक, इमली देकर विष मारे। बाद में दूध, अण्डेकी सफेदी, जैतून-का तेल दे। मर्फियासे दर्द कम करे। कै करानेकी चेष्टा न करे। परन्तु स्टामक ट्युब न लगायें।
एकोनाइट (मीठा विष) धतूरा, अफीम, मर्फिया, गाँजा, भंग।	तेज़ चाय या काफी, पिसा कोयला; सोने न दे, चलाता रहे। श्वास संचालन, परमैनगनेट पोटाशसे पेटकी सफाई। पी सके तो नमक पानी देकर वमन कराये। फिर दो चम्मच कोण्डीका तरल दे। ऐट्रोपाइन या टिंक्चर बेलाडोना।
संखिया या उससे युक्त पदार्थ।	नलीसे कै कराओ और फिर नीबू जलमें जैतून या नारियलका तेल दे। दूध, पानीमें मिला कोयला, फेरिक हाइड्रेट तुरन्त तैयार करके दे —फेरी परक्लोराइड १½ आउन्स,

विष	प्रतिकार
	२ आउन्स जल, ½ आउन्स सोडा कारबोनेट, और ४ आउन्स जल। जबतक आवश्यक हो यह दे। दूध और अण्डा।
हाइड्रोसीनिक एसिड पोटासियम सायनाइड।	चेहरे और गर्दनपर ठण्डा पानी दिया करो। कै कराओ स्मेलिंग साल्ट (smelling salt) या रुमालमें अमोनिया सुँघाओ। मुँहसे ब्रांडी या यदि वेहोश हो तो एनेमा दे। रक्तसंचालन। आवश्यकतानुसार एट्रोपाइन हाइड्रोपोडरमिकली या टिंक्चर वेलाडोना आधा चम्मच।
फास्फोरस, दियासलाईका मसाला, चूहेका विष।	फास्फोरस विष पानमें तेल कभी न दे क्यों कि वह तेलमें घुल जाता है और शरीरमें व्याप्त हो जाता है। कै कराये। जल, चाय, दूध अण्डा। रोगीको गर्मी पहुँ-

विष	प्रतिकार
	चाये। जबतक कै न हो ५—५ मिनटमें ३ ग्रेन कापर-सलफेट जलमें और कै होनेपर आध-आध घण्टे बाद। पेट की नलीमें २० ग्राम जिंक-सलफेट लाभकर है।
टिंक्चर आयोडीन।	स्टार्च और जल। कै करायें। जल, चाय या दूध। अण्डा, जैतूनका तेल। रोगी को गर्म रखे।
कारबोलिक एसिड, क्रियोसोट, लायसोल।	कै न करायें। जलमें एप्समसाल्ट (मैग्नेसिया सल्फेट) या सोडा सल्फेट, काफी जलमें अण्डा और दूध।
नक्सवोमिका, स्ट्रिक्नाइन।	कै करानेका उपाय करें पानीमें कोयला, आधे ग्लास जलमें ½ चम्मच टिंक्चर आयोडीन, नली या दवासे कै करायें। हर १५ मिनिटपर एक ग्लास जलमें २ ड्राम पोटेसियम ब्रोमाइड।

विष	प्रतिकार
	क्लोरोफार्म सूंघनेसे ऐंठन नहीं होती। श्वास संचालन।
कोल गैस, मार्श गैस, कारबन मानाक्साइड और डायाक्साइड, पिट-गैस।	रोगीको ताजी हवामें ले जाओ। श्वास संचालन। आक्सीजन नाकसे, गर्मी और चेतनकारी पदार्थ, ब्राण्डी आदि। स्ट्रिक्नाइन। नमकके पानीका गुदामें इंजेक्शन। सर और सीनेपर ठण्डा पानी छिड़को।
सर दर्दकी औषधियाँ, वनिल, सल्फोनाल।	कै करायें। गरम काफी। सोने न दे। श्वास संचालन यदि आवश्यक हो।
मद्यपान।	कै करानेकी दवा और पेटमें नली। सरपर बरफ, हाथ पांवमें गर्मी, हृदयकी गति बन्द होते देखकर उत्तेजक पदार्थ दे।

५१—उत्तेजक पदार्थ :—

जब किसी रोगीमें उत्तेजना या चेतनता लानी हो तो आरम्भमें अन्य साधनोंका सहारा ले, शराब से बचे। तेज

काफी, गर्म दूध और मांसका शोरबा दे यदि वह खा सके। नाकसे स्मेलिंग साल्ट सुँघाये। चेहरे पर बारी-बारीसे ठण्डे और गरम जलके छींटे, गरम कपड़े या गरम कपड़ेमें गरम जलकी बोतले कांखमें रखे। जलमें ५ बूंद स्ट्रिकनिया बड़ोंको और कम अनुपातमें बच्चोंको दे। इससे चेतनता आती है। मानसिक आघातमें ऐकोनाइट ६ लाभकर है।

५२—चर्म रोग :—

(क) जलना :—(१) यदि चर्म खुल जाये—कैंथारिस मलहम; निकले हुए चर्मपर आर्टिका मलहम।

(ख) फोड़ेका दर्द—बेलाडोना मलहम लगाये।

(ग) चर्मका चटखना, दरार पड़ना—कलेण्डुला θ का लेप; कलेण्डुला मलहम टैमस स्पिरेट या तेल लाभकर है।

(घ) पाँवमें बेवाई—ग्रै फाइटोस स्पिरेट।

(ङ) गोखुरू—आरनीका θ, या आरनीका प्लास्टर, सिरकेमें रुई भिगोकर लगाये।

(च) अपरस :—ग्रै फाइटोस, इरिसवर्स, स्कूकुम चका स्पिरेट।

(छ) फुन्सी :—(१) गुदा या अण्डकोषपर खुजली—स्पिरेट आफ हाइड्रार्ग, आक्साइड फ्लेव। (२) रूसी—कलेण्डुला या हेमामेलिस मलहम।

(ज) खोपड़ी या नाखूनकी बीमारी—फाइटोलक्का मलहम।

(झ) फंगस—साँपकी छतरीका तरहका फोड़ा फुन्सी —थुजा θ का लोशन। कलेण्डुला θ का लोशन।

(ञ) गठिया—लीडम θ का लेप।

(ट) नेटिस रैश—अरटिक अरेन्स θ का लोशन; कलेण्डुला θ का लोशन।

(ठ) लेपरा और ल्यूपस—कैंथारिस θ का लोशन और मलहम।

(ड) स्तनमें शिकायत—हेमामेलिस θ का लेप। ग्रैफाटिस मलहम लगाये।

(ढ) मुँहासे—आरनीका θ या लीडम θ का लोशन।

(ण) कानके पीछे घाव—कलेण्डुला या फाइटोलक्का मलहम।

(त) अंगूठोंके बीच घाव—ग्रैफाइटिस मलहम।

(थ) दाद—फाइटोलक्का या क्राइसोफैनिक एसिडका मलहम।

(द) लील—थुजा θ लगाओ।

(ध) फोड़े—प्लाण्टगोका लोशन और मलहम।

(न) चेचक—खुजलाहट रोकनेके लिये जैतूनके तेलमें कलेण्डुला θ; दाग रोकनेके लिये जैतूनके तेलमें थूजा θ या बोरोग्लिरीडमें मिलाकर।

(प) दाँतका दर्द—प्लाण्टेगो, पिपरमिंटका तेल।

(फ) कृमि—चर्बी, इनफ्यूजन कासिया।

५३—फोड़े और घाव—

तुरन्त और बगैर किसी दुर्घटनाके अच्छा करनेके लिये सेप्टिक (जहरीला) न होने दे यह जरूरी है। प्रत्येक चीज और सेवकके हाथ पैर साफ हों। डाक्टरी रुई, कपड़ा, गाज, पट्टी, चाकू, चिमटी, कैंची सभी वैज्ञानिक रीतिसे शुद्ध हों, इन छोटी बातोंका ख्याल न रहनेसे घाव जहरीले हो जाते हैं और सारे शरीरमें विष व्याप्त हो जाता है।

फोड़े या घाव को धोते या बदलते समय खुजलाहटका कारण पहले दूर करना चाहिये। साधारण नियम—(१) शरीर का भाग उठाकर, ठण्डे पानीसे या घावको दबाकर या रक्त वाहिनी नाड़ीपर दबाव डालकर खून बन्द करना। (२) विजातीय पदार्थको पानी, रुई, चिमटी, स्पंज आदिसे गंदगी और खुजलाहट दूरकरना। (३) कलेण्डुला लोशन से घावोंको धोना। (४) खूनके कतरे हटाना। यदि घाव साफ हो और कई जगह न हो तो कलेण्डुला लोशनमें रुई या कपड़ा भिगो कर उसपर रख दे। फिर उसपर सिल्क, ग्रीजप्रूफ कागज या केलेका पत्ता रखकर पट्टी बांध दे। पहली पट्टी दूसरे दिन न खोली जाये बल्कि तीसरे दिन बदल दी जाये। तेज हथियारसे घाव होने पर लीडम लोशन लगाना चाहिये। यदि वह न मिले तो कलेण्डुला लोशन लगाये क्योंकि यह विष नाशक सिद्ध हुआ है। अन्य घावमें ठण्डे जलकी धार लाभकर है।

गहरे इधर-उधर और कुचले गये घावोंमें पूर्व परिच्छेद में बतलाये गये उपाय करना चाहिये और सिलाई या प्लास्टरसे एक करना चाहिये। किसी अवस्थामें ऐसा असम्भव हो जाता है क्योंकि घाव लम्बा-चौड़ा हो जाता है। उन्हें ऐसा ही रहने दे और आवश्यक उपचार करे।

जब पट्टी बाँधने लगे तो यह ख्याल रखे कि जो नया चर्म तैयार हुआ हो वह फटने न पाये, खुजलाहट होनेपर फोड़े-पर गरम पानी या पुलटिस आराम देती है। फोड़े या घावसे दुर्गन्धका मतलब यह है कि उसे ठीकसे साफ नहीं किया गया है और उसका परिणाम भीषण हो सकता है। पहली पट्टी तीसरे दिन खोले और रोज बदलता जाये।

बिल्ली या चिड़ियाके नखके खरोंचको पानीसे धोकर कलेण्डुला θ लगा दे।

घोड़ा, कुत्ता और बिल्लीका काटा—यह घाव अक्सर इधर-उधर और कुचले हुए होते हैं। गरम पानीसे धो कर कलेण्डुला θ लगा दे। खून बहना बन्द करे। नीमकी पत्तीकी या कोयलेकी पुलटिस बांधे। यदि घावमें दर्द हो तो पानीमें उबाल कर पोस्ताके ढेंडे बांधे। खानेकी आवश्यक औषधि दे।

मक्खी या खटमलके काटनेपर सिरका और पानी बराबर मिलाकर लगाना सर्वोत्तम माना गया है।

हमारी प्रकाशित अन्यान्य हिन्दी पुस्तकें।

(१) पारिवारिक चिकित्सा।—लगभग १९०० पृष्ठ सब रोगोंकी चिकित्सा। दो खण्डोंका मूल्य ५)

(२) संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा।—२२४ पृष्ठ सजिल्द १॥) कागज़ जिल्द १)

(३) होमियोपैथिक सार-संग्रह।—जेबी गुटिका साइज़। ४७० पृष्ठ मूल्य ॥)

(४) पारिवारिक भेषज-तत्व।—१६०० पृष्ठ सुन्दर सजिल्द मूल्य ५)

(५) जननेन्द्रियके रोग (सचित्र)।—मूल्य १)

(६) स्त्री-रोग चिकित्सा।—(सचित्र) समस्त स्त्री-रोगोंका इलाज। ५०० पृष्ठ। सजिल्द २)

(७) हैजा चिकित्सा।—२१२ पृष्ठ। सजिल्द २)

(८) बायोकेमिक चिकित्सा।—१७० पृष्ठ मूल्य १)

(९) भेषज-विधान।—पृष्ठ २७४। मूल्य १।)

(१०) ऐलेन्स कीनोट्स—मूल्य ३॥)

(११) भेषज-लक्षण-संग्रह।—दो खण्ड। मूल्य १७)

(१२) आर्गेनन होमियोपैथी-विज्ञानका शिक्षक। मूल्य २)

(१३) फैरट मेटिरिया-मेडिका।—खूब सरल भाषामें हिन्दी भाषान्तर पृष्ठ—१४८४ दो खण्डोंमें—१२)

इनके अलावा अङ्गरेजी उर्दू, गुजराती, उड़िया आदि भाषाओंमें भी ग्रन्थ तैयार हैं। सूचीपत्र तैयार है। मँगानेसे ही भेजा जाता है।

पता :—एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

इकोनमिक फार्मेसी, ८४ नं० क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

Shri Haribamsa Prasad Upachyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा,
Ishwariniwas Nepalganj, (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके)
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

Bounded By
A. HAKIM.